 ੧ਓ सतिगुर प्रसादि ॥ 

गुर गिआन अंजन सचु नेत्री पाइआ ॥
अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ ॥

मासिक

गुरमति ज्ञान

मार्गशीर्ष-पोष, संवत् नानकशाही ५४७
वर्ष ९ अंक ४ दिसंबर 2015

संपादक : सिमरजीत सिंघ

चंदा

सालाना (देश)	१० रुपये
आजीवन (देश)	१०० रुपये
सालाना (विदेश)	२५० रुपये
प्रति कापी	३ रुपये

चंदा भेजने का पता

सचिव, धर्म प्रचार कमेटी
(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी)
श्री अमृतसर-१४३००६
फोन : 0183-2553956-60
एक्सटेंशन नंबर
वितरण विभाग 303 संपादकीय विभाग 304



फैक्स : 0183-2553919
e-mail : gyan_gurmat@yahoo.com
website : www.sgpc.net

ISSN 2394-8485

विषय-सूची

गुरबाणी विचार

सलोक म: ५ ॥
पहिला मरणु कबूलि जीवण की छडि आस ॥
होहु सभना की रेणुका तउ आउ हमारै पासि ॥१॥
म:५॥ मुआ जीवंदा पेखु जीवदे मरि जानि ॥
जिन्हा मुहबति इक सिउ ते माणस परधान ॥२॥
म:५॥ जिसु मनि वसै पारब्रहमु निकटि न आवै पीर ॥
भुख तिख तिसु न विआपई जमु नही आवै नीर ॥३॥
पउड़ी ॥ कीमति कहणु न जाईऐ सचु साह अडोलै ॥
सिध साधिक गिआनी धिआनीआ कउणु तुधुनो तोलै ॥
भंनण घड़ण समरथु है ओपति सभ परलै ॥
करण कारण समरथु है घटि घटि सभ बोलै ॥
रिजकु समाहे सभसै किआ माणसु डोलै ॥
गहिर गंभीरु अथाहु तू गुण गिआन अमोलै ॥
सोई कंमु कमावणा कीआ धुरि मउलै ॥
तुधहु बाहरि किछु नही नानकु गुण बोलै ॥२३॥ *(पन्ना ११०२)*

श्री गुरु अरजन देव जी 'मारू वार महला ५' के शीर्षक वाली इस वार के उपरोक्त सलोक तथा पउड़ी में फरमान करते हैं कि मनुष्य अपनी हउमै (अहंकार) को त्यागकर ही परमात्मा के निकट हो सकता है। गुरु जी कहते हैं कि हे जीव! पहले अपने अहंकार को मार तथा अहंकारग्रस्त जीवन से लगाव कम कर; सभी के चरणों की धूल बन जा अर्थात् अति विनम्र-भाव वाला बन जा तभी तुझे परमात्मा की निकटता प्राप्त होगी। आगे गुरु जी कहते हैं कि उसी मनुष्य को आत्मिक रूप से ज़िंदा समझो जिसने अपने मन की सांसारिक तृष्णाओं को खत्म कर लिया है। इस संसार के हर रंग में डूब जाने वाले मनुष्य आत्मिक मृत्यु मर जाते हैं। वही मनुष्य श्रेष्ठ कहे जा सकते हैं जिनका प्यार एक (परमात्मा) के साथ है। आगे गुरु जी का कथन है कि जिस मनुष्य के मन में परमात्मा का नाम सदा बसता है उनके निकट कोई दुख-कलेश नहीं आता; माया रूपी भूख-प्यास का उस मनुष्य को एहसास नहीं होता तथा यम (मृत्यु) का डर भी उसके पास नहीं फटकता। पउड़ी में गुरु जी फरमान करते हैं कि हे सदा स्थिर रहने वाले पातशाह! तेरी कीमत कही नहीं जा सकती। साधना करने वाले सिध, योग करने वाले योगी, ज्ञान-चर्चा करने वाले तथा ध्यान लगाने वाले, इनमें से कौन हैं जो तेरी कीमत पा सकें? अर्थात् कोई नहीं। सारी सृष्टि को पैदा करने वाला तथा उसका नाश करने वाला भी परमात्मा ही है। वो सब कुछ करने के योग्य है और वही सभी में बोल रहा है। प्रत्येक मनुष्य की जीविका का प्रबंध वही करता है। मनुष्य तो व्यर्थ में घबराता है। हे प्रभु! तू बड़ा गंभीर है, सियाना है, तेरे गुणों का मूल्य नहीं लगाया जा सकता। मनुष्य वही कार्य करता है जो उसके अंदर प्रभु ने उसके पूर्व किये कर्मों के अनुसार संस्कार रूप में भर दिए हैं। हे प्रभु! तुझसे बाहर कुछ नहीं है, अत: मैं तेरी प्रशंसा करता हूं। 



आओ! शहीदों की आशीष प्राप्त करें . . .

भारत देश गुलामी की जंज़ीरों में जकड़ा हुआ था। भोली-भाली जनता हाकिमों के जुल्म से त्राहि-त्राहि कर रही थी। किसी को कोई रास्ता दीख नहीं पड़ रहा था। श्री गुरु नानक देव जी ने जनता को जागृत करने के लिए लामबंद किया। जनसाधारण में जागृति पैदा की। उन्होंने जनसाधारण को जात-पात, ऊंच-नीच, स्त्री-पुरुष का भेदभाव जैसी हर प्रकार की गुलामी की जंज़ीरें तोड़ने की प्रेरणा की। जनसाधारण को नाम जपो, किरत करो एवं वंड छको का उपदेश देकर एक मंच पर इकट्ठा किया। गुरु जी को हाकिमों के जुल्म के विरुद्ध आजादी की आवाज़ उठाते हुए बाबर के कारावास में चक्की भी चलानी पड़ी। दूसरे गुरु साहिबान द्वारा भी अपने-अपने समय इसी विचारधारा पर डटकर पहरा दिया गया, इसलिए उन्हें कई तरह की अकह एवं असह यातनायें भी झेलनी पड़ीं। पंचम पातशाह साहिब श्री गुरु अरजन देव जी को गर्म तवी पर बैठकर शहीदी प्राप्त करनी पड़ी। नवम् पातशाह साहिब श्री गुरु तेग बहादर साहिब को दिल्ली के चांदनी चौक में शहादत देनी पड़ी। सिक्ख गुरु साहिबान जहां जब्र-जुल्म की जड़ें उखाड़ने के लिए शहीदियां प्राप्त कर रहे थे वहां हाकिम जनता को धमकाने के लिए एक-दूसरे से बढ़कर जुल्म कर रहे थे। इसी शृंखला को आगे चलाते हुए साहिब श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने अपना सारा परिवार वार दिया।

चमकौर साहिब की जंग में बहुत बड़ी ज़ालिम फौज से जूझते हुए साहिबज़ादा बाबा अजीत सिंघ जी तथा साहिबज़ादा बाबा जुझार सिंघ जी हक-सच के लिए शहीदी प्राप्त कर गये। वृद्ध अवस्था में माता गुजरी जी तथा छोटे साहिबजादे--बाबा ज़ोरावर सिंघ जी तथा बाबा फ़तहि सिंघ जी को बाल्य अवस्था में घोर यातनायें देकर सरहिंद में शहीद कर दिया। वजीर खां का यह अति घिनौना कार्य मुगल राज्य की गुलामी से आज़ादी के संघर्ष के लिए रास्ता सपाट कर गया।

दशम पातशाह साहिब श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने अपने सदैव आज़ाद सुपुत्रों (खालसा) के लिए अपने चारों साहिबज़ादों, माता गुजरी जी को कुर्बान कर दिया, हमारे लिए आज़ादी के चिन्ह 'संत-सिपाही' की वर्दी की बख़्शिश की, हमें सदा के लिए सच्ची-सुच्ची गुरबाणी की शिक्षा के साथ जोड़ दिया, हर तरह की गुलामी से युगों-युगांतरों तक छुटकारा दिला दिया।

साहिबज़ादों की शहादत की स्मृति सिक्खों के मनों में भीतर तक उकरी गई। इस साके की स्मृति को हिंदोस्तान की जनमानस अत्यंत तीव्रता से महसूस करती है। शहीदी स्थान

फ़तहिगढ़ साहिब तथा चमकौर साहिब के क्षेत्रों की जनसाधारण आज भी संताप झेलती देखी जा सकती है। इस क्षेत्र के सभ्याचारक जीवन में करुणा के एहसास ने अपना संज़ीदा प्रभाव डाला है। इन दिनों यहां के लोग अपने घर-परिवारों में जहां दूर-दूरस्थ से आई संगत का आव-भगत (स्वागतम) करते हैं, वहीं वैराग्य-से, मायूस-से और गुम-सुम-से भी दिखाई देते हैं। कई गावों की स्त्रियां आज भी इन दिनों सफेद कपड़े पहनकर वैराग्यमयी अवस्था में नत्मस्तक होने के लिए शहीदी स्थान पर पहुंचती हैं। कई परिवार तो चारपाईयों-वस्त्रों को छोड़कर ज़मीन पर सोते हैं और चुल्हे तक नहीं जलाते। इस क्षेत्र के लोग इन दिनों कोई विवाह-शादी का समागम करने से भी संकोच करते हैं। इन सभी उपरोक्त कारणों ने महान अपने शहीदों को सदा-सर्वदा के लिए ख़्यालों में बसाए रखने की माला में गूंथा हुआ है।

आज हम अपने महान शहीदों की कुर्बानी को भुलाकर गुलामी की जंज़ीरों में फिर अपना सिर जान-बूझकर फंसा रहे हैं; अपनी अलग आज़ाद आभा को खो रहे हैं; नशों के गुलाम हो रहे हैं; सच्चे गुरु को छोड़कर तथाकथित संतों की गुलामी के लिए तत्पर हुए फिरते हैं। सुबह का भूला शाम को घर वापिस आ जाए तो उसे भूला नहीं कहते। आओ! अपनी विरासत से सदा जुड़े रहने का प्रण करें तथा अपनी आजाद हस्ती का डंका सारे संसार में बजाकर अपने शहीदों का गौरव बढ़ायें; उनकी आशीष प्राप्त करें! 

जउ तउ प्रेम खेलण का चाउ ॥ सिरु धरि तली गली मेरी आउ ॥
इतु मारगि पैरु धरीजै ॥ सिरु दीजै काणि न कीजै ॥२०॥
नालि किराड़ा दोसती कूड़ै कूड़ी पाइ ॥ मरणु न जापै मूलिआ आवै कितै थाइ ॥२१॥
गिआन हीणं अगिआन पूजा ॥ अंध वरतावा भाउ दूजा ॥२२॥
गुर बिनु गिआनु धरम बिनु धिआनु ॥ सच बिनु साखी मूलो न बाकी ॥२३॥
माणू घलै उठी चलै ॥ सादु नाही इवेही गलै ॥२४॥
रामु झुरै दल मेलवै अंतरि बलु अधिकार ॥ बंतर की सैना सेवीऐ मनि तनि जुझु अपारु ॥
सीता लै गइआ दहसिरो लछमणु मूओ सरापि ॥ नानक करता करणहारु करि वेखै थापि उथापि ॥२५॥
मन महि झूरै रामचंदु सीता लछमण जोगु ॥ हणवंतरु आराधिआ आइआ करि संजोगु ॥
भूला दैतु न समझई तिनि प्रभ कीए काम ॥ नानक वेपरवाहु सो किरतु न मिटई राम ॥२६॥
लाहौर सहरु जहरु कहरु सवा पहरु ॥२७॥

मानवता के सर्वसांझे गुरु

-जत्थेदार अवतार सिंघ*

श्री गुरु नानक देव जी समूची मानवता के सांझे गुरु हैं। आप जी के जीवन इतिहास और उपदेशों से यह बात सपष्ट हो जाती है कि आप समूची मानवता के कल्याण हेतु इस संसार में आए। श्री गुरु नानक देव जी का जन्म १४६९ ई में पाकिस्तान के वर्तमान नगर श्री ननकाणा साहिब में हुआ। सिक्ख इतिहास में से गुरु साहिब जी के जीवन में किरत करने, नाम जपने और वंड (बांटकर) छकने के विलक्षण महत्त्व के लखायक तत्व दृष्टमान हो जाते हैं। गुरु जी ने आरंभ से ही मानवीय एकता, समानता तथा धार्मिक अस्तित्व को अपने जीवन का अभिनय अंग बनाया हुआ था।

श्री गुरु नानक देव जी का आगमन एक ऐसे युग में हुआ जब उत्तर-पश्चिमी भारत लगभग तीन शताब्दियों से मुगल शासकों के प्रभाव अधीन पूर्ण रूप में आ चुका था। मुगल शासकों के प्रभाव अधीन लोग अपनी धार्मिक रीतियों का त्याग कर चुके थे। इस सामाजिक गिरावट का वर्णन गुरु साहिब ने अपनी पावन बाणी में अनेक स्थानों पर किया है। श्री गुरु नानक देव जी ने सिक्ख धर्म को केवल आध्यात्मिकता तक ही सीमित नहीं रखा, बल्कि यह धर्म मानवीय जीवन की प्रत्येक पक्ष से अगुआई करने वाला बनाया। उन्होंने मनुष्य को दया, सेवा, संतोष, आत्म-निर्भर और स्वाभिमान वाला जीवन जीने के योग्य बनाया।

गुरु साहिब के समय हिंदोस्तान में तथाकथित ब्राह्मणों, काज़ियों और योगियों का बोलबाला था। यह लोग अपने आप को धर्म के ठेकेदार एलानते थे परंतु श्री गुरु नानक देव जी के विचार अनुसार यह असल धर्म से रिक्त थे। इन्होंने अपने स्वार्थ के लिए धार्मिक भेस को अपनाया हुआ था। इसका ज़िक्र गुरु साहिब ने अपनी बाणी में इस तरह किया है :

कादी कूड़ु बोलि मलु खाइ ॥
ब्राहमणु नावै जीआ घाइ ॥
जोगी जुगति न जाणै अंधु ॥
तीने ओजाड़े का बंधु ॥ *(पन्ना ६६२)*

श्री गुरु नानक देव जी के समय हिंदोस्तानी समाज में स्त्री की दशा बहुत दयनीय थी। स्त्री को पांव की जूती, दासी और परदे आदि में रहने वाली वस्तु ही समझा जाता था। ऐसी स्थिति में स्त्री ने भी अधीनता को अपने जीवन का जन्म से अंग स्वीकार कर लिया था। गुरु साहिब जी ने स्त्री के सम्मान की हकीकत में बहाल करते हुए अपने पंथ में मर्द के समान खड़ा कर दिया। स्त्री के मान-सम्मान और प्रशंसा के पक्ष में बुलंद की आवाज़ आप जी की बाणी में देखी जा सकती है। आप जी का पावन फरमान है :

भंडि जंमीऐ भंडि निंमीऐ भंडि मंगणु वीआहु ॥
भंडहु होवै दोसती भंडहु चलै राहु ॥
भंडु मुआ भंडु भालीऐ भंडि होवै बंधानु ॥
सो किउ मंदा आखीऐ जितु जंमहि राजान ॥
(पन्ना ४७३)

**अध्यक्ष, शिरोमणि गु. प्र. कमेटी, श्री अमृतसर।*

इसी तरह सतिगुरु जी ने ऊंच-नीच और जात-पात के भेदभाव की ज़ोरदार निंदा की। यह नहीं कि गुरु जी ने समाज के लोगों को ही उपदेश दिया, बल्कि इस पर स्वयं भी अमली रूप में पहरा दिया। आप जी पावन फरमान करते हैं :

नीचा अंदरि नीच जाति नीची हू अति नीचु ॥
नानकु तिन कै संगि साथि वडिआ सिउ किआ रीस ॥ (पन्ना १५)

श्री गुरु नानक देव जी ने वहम-भ्रम का खंडन कर मूल-मंत्र में परमात्मा के स्वरूप की व्याख्या की और उसकी प्राप्ति का मार्ग भी बताया। जपु जी साहिब में गुरु साहिब जी ने उत्तम पुरुष की अवस्था ब्यान करते हुए स्पष्ट किया है कि नाम-सिमरन द्वारा मन से विकारों की मैल उत्तर जाती है और मन जागृत हो जाता है। जो मनुष्य परमात्मा की स्मृति में अपने मन को स्थिर रखते हैं, वह उसी में अभेद हो जाते हैं और नाम-सिमरन करते हुए सरबत्त के भले वाला जीवन व्यतीत करते हैं। गुरु साहिब पावन फरमान करते हैं :

जिनी नामु धिआइआ गए मसकति घालि ॥
नानक ते मुख उजले केती छुटी नालि ॥ (पन्ना ८)

गुरु जी ने मेहनत एवं ईमानदारी की सच्ची 'किरत करने' और 'वंड छकने' का उपदेश दिया और कहा कि पवित्र कमाई वही है जो समझदारी और ईमानदारी से की गई हो झूठ बोलकर और ठग्गी मारकर की कमाई हक-सच की कमाई नहीं कही जा सकती। रिश्वत लेकर या भ्रष्ट तरीके के साथ की गई कमाई लोगों का खून चूसने के समान है। यही पर बस नहीं! हक-सच द्वारा की गई कमाई को वंड छकने का उपदेश भी गुरु जी का विलक्षण सिद्धांत है :

घालि खाइ किछु हथहु देइ ॥
नानक राहु पछाणहि सेइ ॥ (पन्ना १२४५)

'किछु हथहु देइ' का यह सिद्धांत दूसरे धार्मिक मतों के दान आदि के सिद्धांत से विलक्षण भावार्थ रखता है क्योंकि अन्य धर्मों में दान मनुष्य के निजी हित या अगले जन्म में अच्छे फल की कामना को मुख्य रखकर किया जाता था परंतु गुरु साहिब ने दान के अर्थ किसी मकसद की पूर्ति या व्यक्तिगत लाभ को मुख्य रखकर नहीं किए, बल्कि उनके इस सिद्धांत में 'सरबत्त के भले' की ख्वाहिश प्रकट होती है। 'वंड छकने' या ज़रूरतमंद की सहायता करने के बारे गुरु जी के हुक्म के साथ शर्त यह है कि यह सहायता मेहनत अथवा 'घालि' की कमाई से होनी चाहिए।

गुरु पातशाह जी के उपदेशों से 'सरबत्त के भले' की भावना प्रकट होती है। श्री गुरु नानक देव जी समूची मानवता के सच्चे मार्ग-दर्शक थे, जिन्होंने भ्रम-भुलेखों में भटक रहे समाज को सही मार्ग-दर्शन करके परमार्थ के राह पर तोरा। उन्होंने इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु धर्मशालाएं बनवाईं, लंगर की प्रथा कायम की और संगत-पंगत और सेवा-सिमरन आदि के ऐसे अद्वितीय सिद्धांत मानवता के समक्ष रखे जो सदैवकालीन दिशा दिखाने वाले हैं। आएं! श्री गुरु नानक देव जी द्वारा दर्शायी गुरमति जीवन-युक्ति को अपना कर आदर्श मनुष्य बनने की राह के पथिक बने। 

शहीदी साका

-डॉ. गंडा सिंघ*

श्री अनंदपुर साहिब को घेरा पड़े हुए सात महीने हो गए थे और यह दिन-प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा था। किले के अन्दर घिरे हुए सिंघों का खाना-पीना और चारा समाप्त हो चुका था। हालात कुछ डांवांडोल थे। बादशाह औरंगज़ेब यद्यपि स्वयं तो दक्षिण में बैठा था परन्तु उसके ताड़ना भरे पत्रों ने फौज़दारों को विपत्ति में डाल रखा था और फ़ौजदार आगे अपना गुस्सा पहाड़ियों पर निकाल रहे थे। एक मामूली किले पर सरहिंद, लाहौर, कश्मीर और मुलतान आदि प्रदेशों, मलेरकोटला, कसूर तथा अन्य फौज़दारों पर शिवालिक पहाड़ियों पर २२ राजाओं की संयुक्त फौज़ों का सात महीने घेरा डाले रहना कोई सामूली बात नहीं थी परंतु करे भी क्या जब आगे वश ही कोई न चले। जब शाही फौजदारों ने घेरा डालने से काम न निकलता देखा, तो चालाकी से काम लेने की सोची। कुछ हिंदू और कुछ मुसलमान गाए और कुरान शरीफ की कसमें खाकर गुरु साहिब के पास यह विश्वास दिलवाने के लिए भेजे कि यदि गुरु जी दो चार दिनों के लिए श्री अनंदपुर साहिब का किला खाली कर दें तो उनका कुछ नहीं बिगड़ेगा क्योंकि हमारे रवाना होने के तुरन्त बाद आप यहां वापिस आ जाना और हमारी आन भी रह जाएगी अन्यथा औरंगज़ेब हमें तबाह कर डालेगा। गुरु साहिब इस चालाकी को जानते थे और पहले ऐसी बात का एक बार दुष्परिणाम निकल चुका था, जबकि पहाड़ी सेना परीक्षा के लिए भेजे टूटे-फूटे सामान से लदी खच्चरों को लूटने आ पड़ी थी।

परंतु रसद आदि की तंगी और सिक्खों द्वारा माता गुजरी जी से निवेदन करने के कारण कुछ सिंघ उतावले हो रहे थे। गुरु साहिब कुछ दिन और रुकने के लिए कहते थे। इस समय उनसे सहमत न होने वाले कुछ सिंघ श्री अनंदपुर साहिब छोड़कर चल पड़े। अन्ततः गुरु साहिब ने खालसे के हठ के कारण मान कर श्री अनंदपुर साहिब छोड़ना स्वीकार कर लिया परंतु यह बता दिया कि परिणाम बुरा निकलेगा, जिसका दायित्व हमारा नहीं।

६-७ पोष की रात्रि को श्री अनंदपुर साहिब खाली कर गुरु साहिब कीरतपुर के रास्ते निरमोहगढ़ पहुंचे। ऊपर पहाड़ी फौज़ों को भी पता चल चुका था। पहाड़ियों ने अपनी खाई सौगन्धों को तोड़कर आक्रमण कर दिया। पिछले संरक्षक जत्थे का नेतृत्व सरदार अजीत सिंघ के पास था। निरमोहगढ़ से गुरु साहिब ने रोपड़ की ओर रुख किया और सरसा नदी के किनारे पिछले लोगों की प्रतीक्षा के लिए ठहर गए और 'आसा की वार' लगा दी। अब पहाड़ियों को देखकर शाही फौज भी उठ खड़ी हुई थी।

बाबा अजीत सिंघ जी भी लड़ते भिड़ते सरसा नदी आ पहुंचे थे। आगे बाढ़ ग्रस्त नदी थी। सिंघ दोनों ओर से घिरे हुए थे। एक ओर दुश्मन तेजी से आ घिरे हुए थे और दूसरी ओर नदी थी। गुरु साहिब के आदेश पर सिंघ नदी में ही चल पड़े। यहां बहुत नुकसान हुआ। लगभग सारे का सारा सामान जिसमें कई मण

भार केवल लिखित पुस्तकों एवं पांडुलिपियों का ही था, यहां नष्ट हो गया।

नदी पार करके रोपड़ की ओर कूच किया। आगे एक अन्य विपत्ति खड़ी थी। सिंघ अभी तक सरसा पार करने के पश्चात अच्छी तरह एकत्रित भी नहीं हो पाए थे कि रोपड़ के रंघड़ों ने आगे से आक्रमण कर दिया, यद्यपि गुरु साहिब और बाबा अजीत सिंघ ने शीघ्र ही रोकथाम का यत्न किया परंतु इतनी गड़बढ़ मच गई कि सब एक-दूसरे से अलग हो गए। रोपड़ के निकट तक सारा परिवार, माता गुजरी जी, गुरु साहिब के महिल और साहिबज़ादे इकट्ठे ही थे शहर में प्रवेश करने से पूर्व ही गुरु साहिब ने अपने महिलों को एक सिक्ख के साथ दिल्ली भेज दिया, जो उन्हें साथ लेकर शहर में अपने एक सम्बंधी के घर चला गया। रंघड़ों के आक्रमण के पश्चात गुरु साहिब, बड़े साहिबज़ादे बाबा अजीत सिंघ, बाबा जुझार सिंघ तथा कुछ सिंघ चमकौर साहिब गांव की ओर चल पड़े तथा माता गुजरी जी और छोटे साहिबज़ादे बाबा ज़ोरावर सिंघ और बाबा फ़तहि सिंघ जी पुराने सेवक गंगू के साथ एक अन्य दिशा की ओर निकल पड़े। गंगू उन्हें साथ अपने गांव खेड़ी (सहेड़ी) को ले गया और रात बिताने का प्रबन्ध कर लिया।

गुरु साहिब जब बूर-माजरा पहुंचे तो उन्हें पता चला कि दिल्ली की ओर से एक अन्य फौज उनके विरुद्ध चली आ रही है परंतु गुरु साहिब अब किसी अन्य दिशा में मुड़ना उचित न समझकर धीरे-धीरे चमकौर साहिब की ओर निकल पड़े। बाहर राजपूतों के एक बाग में जाकर डेरा डाला और चौधरी को बुलाकर रात्रि के विश्राम के लिए जगह मांगी। चौधरी की हवेली यद्यपि थी तो कच्ची पर थी ज़रा अच्छी बनी हुई। वह मुगलों से डरता हुआ बहाने बनाने लग पड़ा। जब इस बात का उसके भाई गरीबू को पता चला तो उसने आकर विनती की कि महाराज इस हवेली में आधा हिस्सा मेरा है, आप चलकर मेरे घर में विश्राम करें। गुरु साहिब गरीबू के साथ चले गए और हवेली में जा ठिकाना किया।

गुरु साहिब के बहुत तेज़ी से निकल आने पर श्री अनंदपुर साहिब की ओर से पीछे लगी आ रही शाही फौज को उनका जल्दी पता नहीं चला परंतु दिल्ली से आ रही फौज को जब किसी ने ख़बर दी तो वे पीछे चल पड़े और उनके नगाड़े की आवाज़ सुनकर आस-पास के गावों के अनगिनत गुज्जर और रंघड़ भी साथ हो मिले तथा रातों-रात राजपूतों की हवेली को जा घेरा डाला और पीछे से जल्दी से शाही फौज आ पहुंची।

चमकौर का युद्ध : सुबह होते ही गुरु साहिब ने स्नानादि के उपरान्त नित्तनेम से निवृत्त होकर सिंघों को शहादतें प्राप्त करने के लिए तैयारी का आदेश दिया। गुरु साहिब के पास इस वक्त केवल चालीस सिंघ थे। आठ सिंघ दीवारों की सुरक्षा के लिए नीयत हुए ताकि कोई ऊपर छत पर न आ चढ़े। भाई कोठा सिंघ और भाई मदन सिंघ को दरवाज़े पर तैनात किया। भाई आत्मा सिंघ और भाई मान सिंघ को पहरे पर लगाया। स्वंय गुरु साहिब, दोनों साहिबज़ादे बाबा अजीत सिंघ जी और बाबा जुझार सिंघ जी, भाई दइआ सिंघ और संत सिंघ सहित चौबारे से तीर चलाने के लिए बैठ गए और अन्य सिंघ रणभूमि में जाने के लिए तैयार हो बैठे।

सूर्योदय होते ही दुश्मन फौज ने तीर और गोलियां चलानी आरंभ कर दी। गुरु साहिब का शाही फौज पर इतना भय बैठा हुआ था कि

सभी दूर से ही गोली चलाते थे परंतु निकट होकर दीवार या दरवाज़े पर आक्रमण करने का हौसला किसी में नहीं था। शाही फौज ने यह विचार किया कि इस हवेली में कितने सिक्ख होंगे और गुरु साहिब को बच निकलने की क्या हो सकती है? इस लिए इस समय यदि प्यादे को भेजकर पूछ लें कि वे अब युद्ध की आशा को छोड़कर स्वयं ही हमें आत्म सम्पर्ण कर डालें। यह बहुत बड़ी बात कि वे जीवित ही हमारे हाथ आ जाएं। यह सोचकर एक प्यादा भेजा जिसने गुरु साहिब को कहा कि अब राजाओं-महाराजाओं की फौज से आपका टकराव नहीं, यह आलमगीर औरंगज़ेब की फौज है जिसके हाथों से बच निकलना सहज नहीं, इसलिए आप नवाब साहिब की बात मानों और लड़ाई-झगड़े को छोड़ो।

गुरु जी पर इस धमकी का कोई भी प्रभाव न होता देख दूत लौट आया।

दूत के लौटते ही युद्ध प्रारंभ हो गया और गुरु साहिब ने पांच सिंघ मैदान-ए-जंग में भेजे। कहां अनगिनत फौजों की भीड़ और कहा पांच सिंघ और वे भी भूखे परंतु अपने धर्म की रक्षा के लिए अपनी जानें हथेली पर टिकाए हुए मैदान-ए-जंग में उतरे। योद्धाओं के टकराव में टकों (पैसों) के लिए लड़ने आई, मांगी हुई फौजें क्या मायने रखती है? सिंघ जिधर भी बढ़े दुश्मनों का सफाया करते जाएं, अन्त बहुत सारों के घेरे में आकर शहीद हो गए। इस बार भी काफी समय लग गया, इसी प्रकार भाई हिम्मत सिंघ, भाई साहिब सिंघ, भाई मुकन्द सिंघ तथा अन्य कई सिंघ अकेले-अकेले अथवा दो-दो, चार-चार करके, कुर्बानी, के हवन कुंड में अपनी आहुति डाल गए। जब हवेली से तीरों और गोलियों की वर्षा कुछ धीमी होती प्रतीत हुई तो नई आई फौज का कमांडर नाहर ख़ान मलेरकोटलिया सीढ़ी लेकर हवेली पर चढ़ने के लिए आगे बढ़ा परंतु गुरु साहिब ने पहले ही तीर से उसे खत्म कर दिया और वह लड़खड़ाता हुआ धरती पर जा गिरा। इसके गिरते ही सरदार गैरतखान आगे बढ़ा और दीवार पर आक्रमण किया परंतु गुरु साहिब के तीरों के सामने उसका भी कोई वश न चला।

अपने दो सरदारों को ज़मीन पर गिरते देखकर यद्यपि किसी का दीवार की ओर बढ़ने का साहस न पड़ा परंतु क्रोधित होकर दुश्मन दल का एक बार संयुक्त आक्रमण करने के लिए कई फौजदारों ने अपने-अपने आदमियों को आगे बढ़ने का आदेश दिया।

साहिबज़ादा अजीत सिंघ की शहादत : साहिबज़ादा अजीत सिंघ जी गुरु साहिब के पास सुबह से बैठे तीर चला रहे थे, सिंघों को शहीद होता देखकर उनके हृदय में भी जोश पैदा हो रहा था और रणभूमि में जाकर दो हाथ करने के लिए उतावले हो रहे थे। अब शाही फौज को बढ़ते देखकर उनसे न रहा गया। अपने हाथ जोड़कर गुरु साहिब से रणभूमि में जाने की अनुमति मांगी। विश्व के इतिहास में यह पहली उदाहरण है जब एक पिता ने अपने पुत्र को स्वयं कृपाण से सजा कर इस प्रकार चलती तलवारों में भेजा हो। सतिगुरु ने प्रसन्नतापूर्वक अपने वीर पुत्र का मुख चूमकर और थापी देकर मैदान में भेजा। पांच सिंघ आपके साथ गए। रणभूमि में प्रवेश कर साहिबज़ादा अजीत सिंघ ने तीरों की ऐसी बौछार की कि आगे बढ़ रहे दल को वहीं रोक दिया। तुर्क सेना बार-बार आक्रमण करने को आए किंतु कोई वश न चले। जिधर साहिबज़ादा अजीत सिंघ और उनके साथी मुंह करें, दुश्मन जान बचाने के लिए पीछे भागें। साहिबज़ादा अजीत सिंघ ने एक चक्रव्यूह बना कर ऐसी

तीव्रता से चारों ओर बाण वर्षा की कि शीघ्र ही उनके तीरों के तरकश खाली हो गए। अब वे कृपाण लेकर आगे बढ़े और लगे लाशों के अंबार लगाने। इस शूरवीरता को देखकर एक बार तो लाहौर का फौजदार जबरदस्त खां अश अश कर उठा। परंतु जब उसकी दृष्टि अपनी फौज की लाशों पर पड़ी तो क्रोध से उसकी आंखें लाल हो गईं और अपने आदिमयों को ललकारा कि पकड़ लो जीवित को, निकल न पाए। अफ़सर की हल्लाशेरी सुनकर दुश्मन दल का एक दस्ता झुंझला कर आगे बढ़ा और साहिबज़ादा अजीत सिंघ जी पर टूट पड़ा। अब साहिबज़ादा अजीत सिंघ जी भी शेर की भांति भभक कर आगे हुए और लगे दो हाथ दिखाने किंतु इस समय आपकी कृपाण के दो टुकड़े हो गए। कृपाण फेंक कर आपने नेज़ा चलाना प्रारंभ किया परंतु वह भी शीघ्र ही एक मुसलमान को बींधता हुआ टूट कर बेकार हो गया। साहिबज़ादा अजीत सिंघ अब खाली हाथ हो गए। बस फिर क्या था, असंख्य दुश्मनों के घेरे में शहादत का जाम पी गए। गुरु साहिब ऊपर से यह युद्ध देख रहे थे। उन्होंने परमात्मा का धन्यावाद किया कि साहिबज़ादे ने रणभूमि में शहादत प्राप्त की है।

साहिबज़ादा जुझार सिंघ की कुर्बानी : गुरु साहिब ने अब अपने दूसरे पुत्र साहिबज़ादा जुझार सिंघ को बुलाया और कहा, पुत्र अब तुम्हारी बारी आई है, जाओ! रणभूमि में जाकर दुश्मन दल से युद्ध करो और अपने बड़े भाई की तरह खुशी-खुशी शहादत प्राप्त करो। गुरु साहिब का आदेश पाकर साहिबज़ादा जुझार सिंघ जी तैयार हो गए। पिता ने स्वयं तीर कमान और कृपाण सजाई और वह नमस्कार करके पांच सिंघों को साथ लेकर मैदान-ए-जंग में जा उतरे।

इतिहासकार लिखते हैं कि आप दुश्मन-दल में ऐसे घूमते थे जैसे नदी में मछलियों की तलाश के लिए मगरमच्छ घूमता है। इस छोटे से योद्धे को देखकर रिपु-दल उस पर उमड़ पड़ा कि इसे ज़िन्दा पकड़ लो। कुछेक बड़े सरदार आगे बढ़े परंतु वह रणभूमि में वीर-रस का अवतार हो रहा था। जो आगे बढ़ा वो झड़ा। इसे जीवित पकड़ सकने की कोई आशा न रह गई और वह रक्त पे रक्त बहाए जा रहा था तो क्रोधित होकर दुश्मनों ने आ घेरा डाला। चारों ओर से तलवारों का हमला कर दिया और साहिबज़ादा जुझार सिंघ शहीद हो गए।

अब संध्या हो रही थी और पल प्रति पल अंधेरा हो गया। युद्ध बन्द हो गया। इस समय केवल पांच सिंघ ही शेष रह गए थे-- भाई दइआ सिंघ, भाई धरम सिंघ, भाई मान सिंघ, भाई संत सिंघ और भाई संगत सिंघ जी।

अंत में विचार हुआ कि रात्रि को चमकौर की हवेली खाली कर दी जाए। अत: दो सिंघों को वहां धीरे-धीरे तीर चलाते रहने के लिए छोड़ कर गुरु साहिब और तीन सिंघ अर्द्ध रात्रि को हवेली से बाहर निकल आए। गुरु साहिब ने बाहर आकर ताली बजाई और कहा कि 'गुरु जा रहा है' शाही फौज घबरा कर उठी और उनमें परस्पर ही भगदड़ मच गई और गुरु साहिब एक तरफ को निकल गए।

साहिबज़ादा ज़ोरावर सिंघ और फ़तहि सिंघ तथा माता गुजरी जी की गिरफ्तारी : साहिबज़ादा ज़ोरावर सिंघ, फ़तहि सिंघ और माता गुजरी जी ७ पोष की रात्रि को गंगू के गांव खेड़ी उसके घर जा रहे थे। उनके साथ कुछ कीमती सामान भी था, जिसे देखकर गंगू की नीयत खराब हो गयी। अर्द्ध रात्रि को उसने वह कीमती सामान आगे-पीछे कर दिया और चोर-

चोर का शोर मचा दिया। माता गुजरी जी ने उसे कहा कि यहां चोर तो कोई नहीं आया, अगर तू माल के संरक्षण के लिए उसे कहीं रख बैठा है तो कोई बात नहीं, गंगू के अपने पाप कांपते थे। कहने लगा एक तो मैं आपको अपने घर रखूं और दूसरे आप मुझे ही दोषी ठहराओ। माता गुजरी जी ने उसे बहुत समझाने की कोशिश की पर वह अपनी करतूत को छिपाने के लिए उन्हें पकड़वाने में लग गया और निकट ही गांव मोरिंडा से जानी ख़ान और मानी ख़ान को साथ ले आया और प्रात: चंद्रमा की चांदनी में साहिबज़ादों और माता गुजरी जी को गिरफ्तार करवा दिया। जानी ख़ान और मानी ख़ान उन्हें रथ में बिठाकर ले गए। यह घटना ८ पोष के सुबह की है।

प्रात: सुर्योदय के समय वे मोरिंडा पहुंचे और गांव के बाहर एक कुएं पर रथ खड़ा किया। यहां कुएं से माता गुजरी जी और साहिबज़ादों ने जल छका। यहां उन्हें कोई ज्यादा देर नहीं रखा गया। प्रात: होने से पहले ही रथ मोरिंडा से सरहिंद की और हांक दिया गया। शाम को माता जी और साहिबज़ादे सरहिंद पहुंचे और ठंडे बुर्ज में कैद कर दिए गए।

साहिबज़ादों की गिरफ्तारी का सरहिंद समाचार पहुंचने पर वज़ीर ख़ान चमकौर से सरहिंद पहुंचा। साहिबज़ादे और माता गुजरी जी वहां ही बुर्ज में कैद रहे।

अगले दिन साहिबज़ादों को दरबार में बुलाकर उन्हें कहा गया कि आपके पिता गुरु गोबिंद सिंघ जी चमकौर की जंग में शहीद हो चुके हैं। अब आपका कोई वारिस नहीं और आप हमारी कैद में हो। अब आपकी जान तभी बच सकती है अगर आप इस्लाम धर्म अपना लें किंतु साहिबज़ादे इस नश्वर ज़िंदगी के लिए अपने धर्म के परित्याग के लिए कब तैयार हो सकते थे? वज़ीर ख़ान ने दो बार कहा किंतु उन्होंने हर बार इन्कार कर दिया। वज़ीर ख़ान ने यह सोचकर कि ये बच्चे हैं, धीरे-धीरे डराने धमकाने पर मान जाएंगे उन्हें पुन: ठंडे बुर्ज में भेज दिया।

अगले दिन पुन: पेशी हुई और उन्हें इस्लाम धर्म स्वीकार करने के लिए कहा गया। आज साहिबज़ादा ज़ोरावर सिंघ जी ने कुछ कड़ाई से उत्तर दिए जिन्हें सुनकर वज़ीर ख़ान ने क्रोधित होकर दरबार में बैठे शेर मुहम्मद ख़ान मलेरकोटलिए को कहा कि मैं इन दोनों बच्चों को तुम्हारे सपुर्द करता हूं। तुम अपने भाई नाहर ख़ान (जो दिल्ली से आई नई फौज का कमांडर था) और भतीजे ख़िजर ख़ान की चमकौर में मौत का प्रतिशोध लेने के लिए इन्हें कत्ल कर डालो। शेर मुहम्मद दिल वाला व्यक्ति था। उसने कहा मेरा भाई और भतीजा युद्ध में मरे है। मैं उनका प्रतिशोध गुरु गोबिंद सिंघ से मैदान-ए-जंग में लूंगा। युद्ध हुआ है तो श्री गुरु गोबिंद सिंघ से, उसके दूध पीते बच्चों का क्या दोष है और दूसरा यह शराह इस्लामी के विरुद्ध है। इसलिए मैं यह पाप कार्य नहीं कर सकता। यह कहकर शेर मुहम्मद ने हा का नारा लगाया और दरबार से उठ गया।

यह सुनकर वज़ीर खान का दिल कुछ पिघलने लगा। मालूम होता है कि निकट बैठे दीवान सुच्चा नंद ने कहा कि 'अफाई रा कुशतन वा बचाअश रा निगाह दाशतन कारे खिरदमंदा नीसत, चिरा कि अकाबत गुरगज़ादा गुरग शब्द अर्थात सांप को मारना और उसके बच्चों की रक्षा करना कोई अक्लमंदी का काम नहीं क्योंकि बाघों के बच्चे आखिर बाघ ही होते हैं। यह बात सुनकर वज़ीर खान को क्रोध आ गया।

(शेष पृष्ठ २५ पर)

विश्व की अनूठी जंग : चमकौर की जंग

*-डॉ जगजीत कौर**

विश्व के इतिहास में युद्धों का क्रम चलता ही रहा है। आरंभ से ही देव-दानवों के युद्ध, सत्य-असत्य के युद्ध, राजनीति पटल पर बड़े-बड़े सम्राटों के युद्ध, छोटे-मोटे राज्य, रजवाड़ों के युद्ध अपना इतिहास निर्मित करते रहे हैं। किंतु सिक्ख इतिहास के सिक्ख गुरु साहिबान द्वारा लड़े गए युद्ध अपने आप में एक विलक्षण व अनुपम सिद्धांत प्रतिपादित करते हैं। यह युद्ध अन्य युद्धों की तरह शक्ति संयम के लिए, राज्य सत्ता हथियाने के लिए, राज्य की सीमा बढ़ाने, धन संपदा संचय के लिए नहीं लड़े गए हैं बल्कि *'सुभ करमन ते कबहूं न टरों ॥'* के उद्देश्य से लड़े गए हैं। इसमें एक असीम तेजस्वी व्यक्ति मानवता का रक्षक बनकर खड़ा है। जिसका उद्देश्य निरीह दुर्बल, उपेक्षित, कुचली, दबी, घुटी, शोषित मानवता को नृशंस ज़ालिम बर्बर दमनकारी शक्ति संपन्नता से मुक्त करवाना है। रोती, बिलखती मानवता को दमन चक्र से मुक्त करवाकर उसे स्वतंत्रता और स्वच्छंदता के खुले-डुले वातावरण में जीवन के सुखद पल प्रदान करना है। सिक्ख धर्म का उदय ही इसी उद्देश्य से हुआ। विडंबना है कि सिक्ख धर्म के प्रवर्त्तक आदि गुरुदेव श्री गुरु नानक देव जी का अवतरण ही उस काल में हुआ जब विदेशी आवतायी सत्ता का दमन चक्र भारत भूमि पर प्रारंभ हो चुका था। उन्हें आरंभ में ही *'पाप की जंञ लै काबलहु धाइआ ॥'* वाले नृसंश मुगल बादशाह बाबर से टक्कर लेनी पड़ी। सैदपुर ऐमनाबाद में बाबर के ज़ालिम सिपाहियों ने जिस प्रकार निरीह भारतीय आबाध बाल प्रजा का शोषण किया। गुरु साहिब ने अपनी बाणी में उसका खुलेआम विरोध किया और तब बाबा जी के और बाबरकिआं का विरोध आपस में निरंतर चलता ही रहा। बाबा जी के धक्काशाही, जुल्म और अत्याचार के विरोध में मानवता के रक्षक बन खड़े हुए और बाबर के वंशज़ जुल्म की आंधियां चलाते रहे। इसी क्रम में दशम पातशाह श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने खालसा पंथ की साजना की। गुरु नानक पातशाह जी ने ज्ञान, प्रेम रूहानियत, आत्म चिंतन के उपदेशों के साथ-साथ मनुष्यता को अपने स्व की पहचान के साथ-साथ स्वाभिमान जागृत करने का भी संदेश दिया था *"जउ तउ प्रेम खेलण का चाउ सिरु धरि तली गली मेरी आउ इतु मारगि पैर धरीजै सिरु दीजै काणि न कीजै ॥"* अधिकार प्राप्ति के लिए सिर देने की प्रेरणा भी दी थी। उत्तरोतर छठम् पातशाह श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी ने मीरी-पीरी की कृपाणें धारण कर सिक्ख को संत और सिपाही दोनों का रूप दिया। चार बड़े जंग लड़े गए और कितना सुखद आश्चर्य है न कि मुगलों के जुल्मों के सामने सिर झुका देने वाली यही दुर्बल मानवता कैसे युद्धों में विजित हुई। मुर्दा जनमानस हाथ में शस्त्र पकड़कर इस योग्य हो गई कि जुल्म का टाकरा कर सके और तब दशमेश पिता जी के खंडे बाटे का अमृत पानकर तो यह इस योग्य हो गई कि तमाम दुनिया विस्मित हो दांतों तले

**१८०१-सी, मिशन कम्पाऊण्ड, निकट सेंट मेरीज़ अकादमी, सहारनपुर (यू पी)-२४७००१, मो +९१९४१२४-८०२६६*

उंगलियां दबाने लगी :

छेलीअन मारे शेर किम किम बेटेरन मारे बाज ॥

हाकम मारे रय्यतैं यह करमातहिं काज ॥

(श्री गुर पंथ प्रकाश)

श्री गुरु नानक देव के चरणों का जिसने स्पर्श कर लिया, दशमेश पिता जी के खंडे बाटे की पाहुल ग्रहण कर ली वही जुल्म से टकराने के योग्य हो गया।

जिन शाह नानक चरन प्रसाए।
तिन मैं शकति इती भई आए।
चिड़ीअन ते उन बाज कुहाए छेलन कोलों शेर तुड़ाए ॥३७॥ (श्री गुर पंथ प्रकाश)

ऐसा करिश्मा तो विश्व युद्धों के इतिहास में चमकौर की गढ़ी में दिसंबर, १७०४ ई के युद्ध में संसार ने देखा, जहां एक ओर बड़ी संख्या पूरे फौजी सामर्थ्य से लैस हथियार बंद खूंखार मुगल सेनानी और दूसरी ओर भूखे-प्यासे, थके-मांदे केवल चालीस वीर योद्धा और साथ में प्रतिपल उनका उत्साह वर्धन करने वाले अत्यंत तेजस्वी शक्तिमान व्यक्तित्व श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी। गुरुदेव जी के समकालीन कवि सेनापति के शब्दों में :

कहां बीर चाली ध्रुधावंत सारे
कहां एक जौ लाख आए हकारे। (गुर शोभा)

सन् १६९९ ई की वैसाखी पर खालसा पंथ की साजना के बाद निर्बल जनमानस में लगातार बढ़ती शक्ति को श्री अनंदपुर साहिब के आस-पास के पहाड़ी राजे सहन नहीं कर सके और न ही मुगल सत्ता। अत: लगातार पहाड़ी राजाओं की और मुगलों की सम्मिलित सेना से शुरू में छुट पुट और अंत में श्री अनंदपुर साहिब के बड़े युद्ध में १७०४ ई को बड़ा घेरा डाल लिया गया। श्री अनंदपुर साहिब के किले को चारों ओर से घेर लिया गया। आठ महीने लगातार घेरे रखा। बीच-बीच में सिंघ किले से बाहर निकलते अत्यंत बहादुरी से दुश्मनों को मार अन्न-पानी का जुगाड़ करते। मुगलों का काफी नुकसान हुआ परंतु सिंघों की संख्या भी दिन प्रति दिन कम हो रही थी। किले के अंदर अनाज पानी की किल्लत हो रही थी। कुछ सिंघ तंग आकर बेदावा लिखकर किला छोड़ गए। इस बीच दुश्मन भी तंग आ चुके थे। पहाड़ियों ने गाय की और मुगलों ने कुरान की कसम खाकर गुरु जी को आग्रह किया कि वे किला खाली कर चले जाएं उन्हें शांति से जाने दिया जाएगा, उनकी पूर्ण सुरक्षा का प्रबंध किया जाएगा। १७०४ ई को गुरुदेव लगभग हज़ार-डेढ़-हज़ार बचे सिंघ माता गुजरी जी दोनों गुरु महल चार साहिबज़ादों सहित माल असबाब ले किले से बाहर निकले अभी कुछ दूर ही चले थे कि सरसा नदी के किनारे दुश्मनों की भारी फौज ने अचानक हमला बोल दिया। पौष मास की अत्यंत बर्फीली शीत रात्रि और सरसा का बाढ़ से उफनता जल, रात्रि का अंधकार सारा परिवार बिछुड़ गया। अनेक सिंघ सरसा के उफनते जल में बह गए माल असबाब, दुर्लभ साहित्य सरसा का उफनता बर्फीला जल निगल गया। शाही टिब्बी तक कुछ वीर बहादुरों ने दुश्मनों को रोके रखा किंतु अंत में वे भी शहीद हो गए। बाढ़ के जल से माता गुजरी जी और छोटे साहिबाज़ादे नदी के दूसरे किनारे पहुंच गए और श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी बड़े साहिबज़ादे बाबा अजीत सिंघ और बाबा जुझार सिंघ जी के साथ बचे खुचे केवल चालीस सिंघों के साथ चमकौर साहिब की ओर बढ़े। यहां एक किला नुमा कच्ची गढ़ी थी, गुरु जी ने इसी गढ़ी को युद्ध स्थल चुना। इसकी इस प्रकार कुशल रणनीति से व्यवस्था की कि शत्रु को ऐसा आभास हो कि अंदर विशाल सेनिक बल

है। गढ़ी में पहुंचते रात हो चुकी थी। यहां न कुछ लंगर की व्यवस्था न ही आराम के अन्य साधन थे बस था तो इन शूरवीरों में अदम्य साहस। कई दिन के भूखे-प्यासे सिंघ शूरवीरों का साहस बरकरार था; गुरु के लिए मर मिटने को तैयार थे। मौत तो यकीनी थी। कच्ची गढ़ी के बाहर विशाल मैदान में बड़ी संख्या में दुश्मन फौज अस्त्र-शस्त्रों से लैस थी। गुरु जी के पास आश्रय था तो केवल अकाल पुरख का। इस अगम्यी शूरवीरों में भय का कोई लक्षण नहीं था। अत्यंत शांति से सभी रात्रि में 'रहरासि' साहिब के पाठ में जुट गए। किसी के चेहरे पर भय नहीं था। सूफी फकीर उच्च कोटि का शायर विद्वान, मानवता का निष्पक्ष चिंतक मुसलमान हकीम मिर्जा अल्लह यार खां योगी अपनी रचना 'गंज शहीदां' में सिंघ शूरवीरों के अदम्य साहस, गुरु प्रेम उनकी शहादतें, गुरु जी के बड़े साहिबाज़ादों की शहादत और गुरुदेव जी की शांत मन: स्थिति का अत्यंत हृदय विदारक चित्र पेश करता बताता है कि :

जिस दम हूए चमकौर में सिंघों के उतारे।
झुलाए हूए शेर थे सब गैज़ के मारे।
आंखों से निकलते थे दिलेरों के शरारे
सतिगुर के सिवा और गज़बनाक थे सारे।

गुरु जी ने बहुत शांत भाव से तब दीवान सजाया :

रहिरास का दीवान सजाइआ गुरू जी ने
मिल जुल के सरिशाम भजन गाए सभी ने
खाना कई वकतों से मुय्यसर न था आया
इस शाम भी शेरों ने कड़ाका ही उठाया ॥

सिंघ शूरवीर वहीं गढ़ी के कच्चे फर्श पर लेट गए, थके-मांदे नींद में मग्न हो गए। गुरुदेव जी उन सोए हुए सिंघ शूरवीरों को प्यार से निहारते उनके मध्य घूम रहे थे, पता था कल का युद्ध कितना भयानक होगा, सिंघों की शहादत निश्चित है। कभी किसी को प्यार से निहारते और कभी मुख चूमते :

जिन सिंघों ने कल मौत के साहिल था उतरना।
कल सुबह था जिन खालसों ने जंग में मरना।
चूंमां कभी हलकूम दहन चूमने बैठे।
जब पाइंती आए तो चरन चूंमने बैठे।

अपने लख्ते जिगर दोनों साहिबज़ादों को हाथों से तैयार कर मृत्यु का आलिंगन करने को भेजना था इसलिए :

बाकी थी घड़ी रात गुरू खैमें में आए।
शाहज़ादे यहां दोनों ही सोते हूए पाए।
दोनों के रुख-पाकि से गेसू जो हटाए
अफ़लाक ने शरमा के महु-मिहर छुपाए ॥

१७०४ ई को संसार का विलक्षण युद्ध आरंभ हुआ। पहले गढ़ी के ऊपर गुरुदेव जी ने स्वयं कमान संभाली और ज़बरदस्त तीरों की बौछार करते दुश्मनों को सबक सिखाते रहे। तब गढ़ी में से पांच-पांच सिक्खों के दल खुले मैदान में कृपाण के करिश्में दिखा बड़ी गिनती की फौज का सामना करते रहे पांच-पांच के दल शहीद होते रहे। अब गुरुदेव जी ने सेना की कमान बड़े साहिबज़ादे बाबा अजीत सिंघ जी को सौंपी। स्वयं गुरु साहिब ने अपने हाथों से साहिबज़ादे को अस्त्र-शस्त्रों से लैस कर गढ़ी से बाहर भेजा और तब साहिबज़ादा अजीत सिंघ जी ने युद्ध में ऐसे करिश्में दिखाए कि वीर बहादुर ने भयंकर मार धाड़ मचाई। गुरु शोभा के कवि सेनापति जी के शब्दों में :

चलै रणजीत तब जाइ रण मै परो कीओ संग्राम ऐसे अपारो।
लोथ पर लोथ तह डारिकेती दई भभक करि रकत हुइ चले नारे।
लीए करि सांग लिह आंग पर धरति है तबै ततकार तिह ठउर मारे।
भुजन पै जोर करि लेत उठाइ कै सबन दिखलाइ

भुइ माहि डारे ॥३७॥

चारों ओर बाबा अजीत सिंघ की सांग की मार चल रही है। सांग के बाद उन्होंने कृपाण की मार शुरू की :

करत मार चारो दिसा जीत सिंघ असवार।
सांग तजी करते तबै गह लीनी तलवार ॥४०॥

चारों ओर खून की धाराएं ऐसी प्रवाहित हो रही है मानो फाल्गुन की होली :

देखि तबै बिधि ऐसी भई रुति फागन जो मानो खेलन आयो।
लागति सांगन तेगनि तीर तुफंगन स्रोन चलियो भभकायो।
तहि समै छबि ऐसी भई मानो लाल गुलाल को रंग बनायो ॥
बागो बनो जिह के गल लाल रंगरेज अबै रंग लिआयो ॥५॥

चमकते तेज मंडल मुख से अनेकों को मारते-मारते साहिबज़ादे का अपना शरीर भी रक्त से सन गया। अनेकों घाव शरीर पर लगे *"तन झारी कर सूरमा स्रोन रंग भरि लीन।"* और तब यह अद्वितीय वीर रणभूमि में शहीद हो गया। पुत्र को रणभूमि में गिरते देख पिता ने शाबाशी दी वहीं ऊपर किले से बोले :

बड़ चड़ के खक्के से सुजाइत जो दिखाई सतिगुरु ने वहीं किले से बेटे को बिदाअदी।
शाबाश पिसर! खूब दलेरी से लड़े हो जा किउ ना हो गोबिंद के फरजंद बड़े हो।

गुरु जी शांतचित रहे वाहिगुरु का शुक्राना किया, अल्लह यार खां योगी के शब्दों में :

मुझ पर से आज तेरी अमानत अदा हुई।
बेटे की जान धरम की खातिर फिदा हुई।

उसी मन स्थिति से दूसरे बेटे बाबा जुझार सिंघ को शस्त्रों से लैस कर रणभूमि में भेजा केवल १४ वर्ष की आयु में कृपाण के करिश्मे दिखाते वहीं रणभूमि में जूझकर शहीद हो गए:

भारी जबाब जुझार दए सुनि कै सब दूतन अंग पिराए।
यो प्रभ की करनी तब ही दोऊ जूझत ही प्रभलोक सिधाए ॥
धंनि धंनि गुरदेव सुत तन को लौभ न कीन ॥
धरम राख कल मो गए दादे सो जस लीन ॥

अपने दादा श्री गुरु तेग बहादर जी के पास दोनों शूरवीर जा बिराजे। सतिगुरु जी ने वाहिगुरु का शुक्राना किया। खालसा पंथ साजने का महत कार्य संपन्न हुआ। छोटी आयु के सुपुत्र पंथ हित जूझ सकते हैं। सेनापति के शब्दों में :

ताहि सभे ऐसे कहिओ गोबिंद सिंघ बीचार ॥
आज खास भए खालसा गोबिंद सिंघ बीचार ॥

बाद में गुरु जी ने औरंगज़ेब को उसकी गलतियों का एहसास दिलाते हुए 'ज़फरनामा' पत्र लिखा तो उसमें ज़िक्र किया क्या हुआ अगर तूने अपनी क्रूरता, नीचता, कायरता और धोखे से एक गीदड़ ने शेर के दो बच्चों को खा लिया है, शेर अभी ज़िंदा है :

चि शुद गर शगाले ब मकोर रिआ,
हमी कुशल दोबच्चा इ शेर रा।

यह भी एहसास करवाया था कि उनके सिक्ख कितने वीर बहादुर हैं। चमकौर साहिब का जंग असंतुलित जंग था परंतु फिर भी बहादुर सिंघ पीछे नहीं हटे। ऐसी असंतुलित लड़ाई में अकेली वीरता भी क्या कर सकती है। जब केवल चालीस सिंघों के ऊपर बेशुमार फौज अचानक चढ़ आए। फिर भी जब दुनिया के दीये (भाव सूर्य) ने अपना मुख छुपा लिया था और रात का राजा (भाव चंद्रमा) पूरी सजधज के साथ निकल आया था और लड़ाई बंद हो गई थी। सिंघ शूरवीर पूरा दिन डटे रहे और दुश्मनों के 'लाहू लाहते' रहे। यह है-- चमकौर की अनूठी जंग।



माता गुजरी जी एवं छोटे साहिबजादों की शहादत

-डॉ. सत्येंद्रपाल सिंघ*

सिक्ख बलिदानों का इतिहास जीवन के दुर्लभ पावन उत्सवों का इतिहास है, जहां शीश देने का अवसर मिला तो अपने पुण्यों का फल और जीवन को जीत लेने का पल माना जाता था। इस राह पर पूरी आन, बान और शान के साथ चलते हुए अपने शीश ऐसे वार दिए गए जैसे वे इसी लिए बने थे। जीवन ऐसे न्यौछावर कर दिए गए मानो सारे संसार की नवनिधियां मिल जाने वाली हैं। इस बलिदानी भावना का पुष्ट आधार बना गुरु-शबद जिसने मनुष्य देह की सार्थकता के बारे में संसार के इतिहास में पहली बार चर्चा की और जीवन के प्रति सच्ची दृष्टि प्रदान की। श्री गुरु अरजन देव जी ने अपनी पावन बाणी में मनुष्य के लक्ष्य को स्पष्ट किया :

हरि अमिउ रसाइणु पीवीऐ ॥
मुहि डिठै जन कै जीवीऐ ॥
कारज सभि सवारि लै नित पूजहु गुर के पाव जीउ ॥ (पन्ना १३२)

गुरु पंचम पातशाह ने कहा कि जीवन में सारी प्राप्तियां प्रभु के नाम का अमृत रस पीने से ही होती हैं। परमात्मा का नाम जपने और साधसंगत करने में ही जीवन है। परमात्मा और सतिगुरु के उपदेशों को अपने जीवन का आधार बना लेने से जीवन का लक्ष्य प्राप्त हो जाता है। दशम पातशाह श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने खालसा की साजना करने का उद्देश्य ऐसे जांबाज़ योद्धे तैयार करना था जो शुभ कर्मों के लिए डटकर खड़े रहने और निश्चय के साथ अपने संकल्प को पाने के लिए कटिबद्ध हों। यह संकल्प था परमात्मा पर विश्वास, खंडे बाटे की पाहुल छककर प्रभु के चरणों में अपना सर्वस्व अर्पण कर देने वाले योद्धे देख संसार आवाक था। रणक्षेत्र के अंदर और बाहर सिक्खों का शौर्य आश्चर्यचकित कर देने वाला था। परमात्मा के भय को अपनाकर वे निर्भय हो गये थे। इसका कारण था कि अपने तन से प्रीति की डोर तोड़कर उन्होंने परमात्मा से प्रीति की डोर जोड़ ली थी।

राखु सदा प्रभ अपनै साथ ॥
तू हमरो प्रीतमु मनमोहनु तुझ बिनु जीवनु सगल अकाथ ॥ (पन्ना ८२८)

सिक्ख बलिदान बड़े ही सहज और भावपूर्ण थे क्योंकि एक सिक्ख पल भर के लिए भी परमात्मा की प्रीति, प्रतीति और अपने समर्पण से विलग नहीं होना चाहता था। उसके लिए संसार का सबसे बड़ा आकर्षण परमात्मा था। इस वृत्ति से सिक्खों को अडोल बना दिया और वे दुख-सुख, हर्ष-शोक जैसी सांसारिक भावनाओं से ऊपर उठ गये थे। इन्हीं विचारों, संस्कारों और प्रतिबद्धताओं में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के चारों साहिबज़ादों ने भी आंखें खोलीं और बालपन से ही अपने गुरु पिता के मुख-मस्तक पर झलकते असीम आध्यात्मिक तेज को निकटता से महसूस करने का भाग्यशाली सुअवसर पाया। एक ओर जहां वे मानवीय मूल्यों की रक्षा के लिए खालसा का अवतरण होते देख रहे थे वहीं मुगलों के अन्याय, अत्याचार और धर्मान्ध कुकृत्यों के दंश भी उनके सामने थे। उनके

*ई-१७१६, राजाजी पुरम, लखनऊ-२२६०१७, फोन: +९१९४१५९-६०५३३

सामने राह स्पष्ट थी। इसी लिए श्री अनंदपुर साहिब का किला छोड़ने के बाद मुगलों के विश्वासघात और सरसा नदी की बाढ़ के कारण परिवार भले ही बिखर गया किंतु श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी व सिक्खों की ही भांति चारों साहिबज़ादों के विचार व सिद्धांत अटल रहे। गुरु साहिब एवं अन्य सिक्खों के साथ बड़े साहिबज़ादे बाबा अजीत सिंघ व बाबा जुझार सिंघ चमकौर की गढ़ी जा पहुंचे किंतु छोटे साहिबज़ादों बाबा ज़ोरावर सिंघ व बाबा फ़तहि सिंघ के साथ माता गुजरी जी ही रह गये। माता गुजरी जी के लिए बड़ी कठिन घड़ी थी कि बाकी परिवार से कैसे मिलें और फिलहाल कहां ठिकाना करें? काली अंधेरी रात में उन्हें अपने से अधिक अपने नौ वर्ष और सात वर्ष के पोतों की चिंता हो रही थी जो उनके पुत्र श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की धरोहर की तरह थे। अल्लाह यार खां योगी ने उनकी मनोदशा को बखूबी कलमबद्ध किया।

मनज़ूर इस घड़ी जो तुझे इमतिहान है।
हाज़िर बजाइ पोतों के दादी की जान है।

यह शायद सिक्ख इतिहास का ही नहीं मानव सभ्यता के इतिहास का सबसे कठिन इम्तिहान था। माता गुजरी जी को तय करना था कि उनके नन्हें पोते जिन्हें वह अभी ठीक से लाड़-प्यार नहीं कर पाई थीं, जिनके मस्तक वह भरपूर प्यार से चूम कर अभी पूरी तरह खुश नहीं हो पाई थीं, कैसे संकटों से निकल सकें और कैसे गुरु-घर की प्रतिष्ठा को बनाये रखें जो श्री गुरु नानक देव जी के काल से संसार में सूरज की भांति चमकती आ रही है। माता गुजरी जी का हर कदम बड़ा ही अहम था। उन्हें गुरु-घर का गौरव बनाये रखना था, अपने पोतों की सुरक्षा देखनी थी, अपनी ममतामयी भावनाओं को भी समझना था। जो स्थिति माता गुजरी जी के सामने आ खड़ी हुई थी, उनकी जगह कोई साधारण जन होता तो व्यथित और अधीर हो उठता। इस स्थिति में माता गुजरी जी से अधिक सुयौग्य और कौन हो सकता था? सिक्ख सिद्धांतों को साबित करने और उनकी महत्ता सिद्ध करने के लिए माता गुजरी जी ने श्री गुरु हरिगोबिंद जी के ज्योति-जोत समाने के बाद बाबा बकाला आकर अपने पति श्री गुरु तेग बहादर जी के साथ इक्कीस साल शांत, एकांत, आत्मिक एकाग्रता वाला जीवन जिया था, जिसने उनके मन को परमात्मा के चरणों में टिकाने का ढंग सिखा दिया था। उन्होंने मानव सभ्यता की रक्षा के लिए अपने पति श्री गुरु तेग बहादर जी स्वयं आगे आकर बलिदान देते देखकर और अपने अविचल और अडोल नौ वर्षीय पुत्र श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी को अपने आंचल में लेकर धैर्य और संतोष का अमिट पाठ पढ़ा हुआ था। फिर भी नन्हें पोतों का मुख देखकर जिन्होंने अभी जीवन की ठीक से शुरूआत ही नहीं की थी, एक बार पशोपेश में पड़ना स्वाभाविक रहा होगा किंतु अंततः सिद्धांतों के सूरज को उगना ही था और माता गुजरी जी ने इस स्थिति को बड़े ही धैर्य से स्वीकार किया।

सभु को तुझ ही विचि है मेरे साहा तुझ ते बाहरि कोई नाहि ॥
सभि जीअ तेरे तू सभस दा मेरे साहा सभि तुझ ही माहि समाहि ॥ *(पन्ना ६७०)*

परमात्मा के प्रति ऐसा अटूट विश्वास और सर्म्पण सिक्ख धर्म का स्वर्णिम मार्ग है जो मन और वृत्तियों को वश में कर विषम से विषम परिस्थितियों पर विजय पाने और धैर्य से सच के मार्ग पर चलते रहने की प्रेरणा देता है। माता गुजरी जी को श्री गुरु तेग बहादर जी के साथ बाबा बकाला में रहते हुए इस मार्ग का पूर्ण ज्ञान हो चुका था, इसलिए अविचलित रहते हुए उन्होंने अपने सेवक गंगू, जो एकमात्र व्यक्ति उस समय

उनके साथ रह गया था के साथ जाना तय किया और भविष्य को परमात्मा पर छोड़ दिया। गंगू जिसने बरसों गुरु-घर का नमक खाया था और उसका गांव सहेड़ी भी निकट था। इसलिए उस पर माता गुजरी जी जिनके मन में परमात्मा की सर्वव्यापकता दृढ़ थी, का विश्वास कर लेना सहज ही था। गंगू ने अपने घर के पिछले कमरे में माता गुजरी जी और छोटे साहिबज़ादों को रहने की जगह दी। माता जी के पास मोहरों भरी थैली देखकर गंगू बदनीयत हो गया और उसने रात में चुपके से वह थैली चुरा ली। वह बरसों तक गुरु-घर की सेवा करने और गुरु परिवार का संग करने के बाद भी गुरु साहिबान के उपदेशों और आदर्शों का तिनका भर भी तत्व नहीं ग्रहण कर पाया था। उसके मन की कठोरता, विकार और लोभ वैसे के वैसे ही थे।

कड़छी साउ न संभलै छतीह बिंजन विचि संजोई ॥ *(वार १७:८)*

गंगू जैसे लोगों की दशा की पहचान करते हुए ही भाई गुरदास जी ने लिखा था कि जैसे कड़छी नाना प्रकार के स्वादिष्ट व्यंजनों में घूमती फिरती है परंतु फिर भी वह किसी भी व्यंजन के स्वाद से परे ही रहती है। वैसा हाल कपटी लोगों का होता है जो कितना भी साध संगत कर लें उनके मन के कपट और विकार ज़रा भी कम नहीं होते। गंगू ने अपने व्यवहार से भाई गुरदास जी के उपरोक्त वचन और इसी भाव को मुखर करती गुरु साहिबान की बाणी को सच सिद्ध किया। सुबह जब थैली न देखकर माता जी ने गंगू से पूछा तो पहले तो उसने इन्कार करते हुए अपशब्द कहे फिर गांव के चौधरी से मुखबरी कर दी। जब बात सरहिंद के सूबेदार वज़ीर ख़ान तक पहुंची तो उसने तुरंत माता गुजरी जी और छोटे साहिबज़ादों को कैद करवाकर सरहिंद बुलवा लिया। वज़ीर ख़ान गुरु-घर का घोर विरोधी था और श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी व सिक्खों से निरंतर मिलने वाली मात से बहुत खीझा हुआ था। बदला लेने का यह उसे अच्छा मौका मिल गया। भूखे प्यासे माता गुजरी जी और छोटे साहिबज़ादों को किले के ठंडे बुर्ज में रखा गया। कड़ाके की ठंड में माता जी और साहिबज़ादों के मनोबल को तोड़ने की यह घिनौनी साजिश थी। माता गुजरी जी ने बड़े धैर्य और गरिमा से इसका सामना करते हुए दोनों साहिबज़ादों को अपने आंचल की गर्मी और गुरु साहिबान के गौरवपूर्ण विरासत की ऊर्जा से निहाल करते हुए उन्हें अपने अंदर की शक्ति से पहचान करवाने का महत्त्वपूर्ण कार्य किया। बाबा ज़ोरावर सिंघ और बाबा फ़तहि सिंघ ने माता गुजरी जी के सानिध्य में जो आत्मिक उंचाईयां उस रात हासिल कर लीं, उन्हें तो युगों-युगों तक तपस्या करके भी लोग नहीं प्राप्त कर सके थे। माता गुजरी जी ने उन्हें श्री गुरु नानक देव जी से लेकर श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी तक की मानव कल्याण की गौरव गाथाओं से जोड़ते हुए उस ज़िम्मेदारी का एहसास कराया जो सुबह होते ही उन्हें अपने नन्हें कंधों पर उठानी थीं। सुबह की पौ फूंटने तक ये नन्हें कंधे फौलाद हो चुके थे और थके, भूखे, प्यासे मासूम चेहरों पर श्री गुरु नानक देव जी की निरंकारी ज्योति का जलाल छा चुका था; क्या करना है, कैसे करना है, इसे छोटे साहिबज़ादे पहले ही तय कर चुके थे। माता गुजरी जी के आंचल से पैदा हुआ संकल्प अब उनके मन में रौशन हो चुका था। बाबा ज़ोरावर सिंघ और बाबा फ़तहि सिंघ इस तरह तैयार थे मानो लंबे समय से इस पल के इंतज़ार में थे। जब वज़ीर ख़ान के सिपाही उन्हें कचहरी ले चलने के लिए आये तो वे तैयार-बर-तैयार थे। माता गुजरी जी दोनों साहिबज़ादों को गुरु इतिहास और गुरु आदर्शों से पहले ही संवार-दुलार

चुकी थीं। उनके दमकते चेहरे देख माता गुजरी जी का अंतर्मन आवश्य प्रफुल्लित हो गया होगा। रास्ते भर सिपाही उन्हें वज़ीर ख़ान के दरबार के अदब के बारे में सीख देते गये किंतु वो तो निडर होकर अपने साथ माता गुजरी जी की सीख और गुरु-घर के संस्कारों, मूल्यों की अमूल्य धरोहर लेकर चल रहे थे। उन्हें छोटे दरवाज़े से प्रवेश दिया गया ताकि वे सिर झुका कर अंदर आयें किंतु तुरंत इस चाल को भांप कर साहिबाज़ादों ने पहले पांव अंदर किए फिर अंदर तन कर खड़े हो गये। इसके साथ ही जब उन्होंने खालसा पंथ की फ़तहि *वाहिगुरु जी का खालसा, वाहिगुरु जी की फ़तहि॥* बुलाई तो सारे दरबार में सन्नाटा छा गया। उन्हें डराने, धमकाने, फुसलाने के कई प्रयत्न किए गये कि वे इस्लाम कबूल कर लें किंतु दोनों साहिबज़ादों ने डटकर इसका विरोध किया और अपने पिता श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की सामर्थ्य पर पूरा विश्वास जताया। उन्होंने स्पष्ट कर दिया कि वे दुखों और यातनाओं से डरने वाले नहीं हैं अपने दादा जी श्री गुरु तेग बहादर साहिब की तरह शहीद हो जाना पसंद करेंगे और अपने पंथ पर दृढ़ रहेंगे। यह उस कचहरी के लिए शर्म की बात थी जहां एक से एक योद्धा कहे जाने वाले बैठे थे। साहिबज़ादों की यह ललकार उनकी किसी रणभूमि से भी बड़ी पराजय थी।

रण जूझत किरपाल के नाचत भयो गुपाल ॥
सैन सभै सिरदार दै भाजत भई बिहाल ॥
(बचित्र नाटक)

युद्ध का जो उपरोक्त सजीव वर्णन श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने उपरोक्त शब्दों में किया वैसे ही हालात वज़ीर ख़ान की कचहरी में हो रहे थे। खीजते हुए वज़ीर ख़ान और उसके दरबारी श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने नन्हें लालों को सज़ा देने पर विचार करने लगे। बाबा ज़ोरावर सिंघ और बाबा फ़तहि सिंघ के चेहरों पर शिकन तक नहीं थी। उन्हें तो रात भर उनकी दादी माता गुजरी जी ने सजाया-संवारा था; गुरु साहिबान के महान इतिहास, पावन गुरु शिक्षाओं और पिता श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के पवित्र मनोरथ से। इससे वे ऐसे तेजस्वी व्यक्तित्व के स्वामी बन गये थे संसार की सारी पुण्य आत्मायें उन पर नाज़ कर रही थीं और अपना आशीर्वाद दे रही थीं कि वे एक नया इतिहास लिखकर अपने जीवन को और मानवता को धन्य कर दें। वज़ीर ख़ान के सारे दरबारी अलग-अलग राय दे रहे थे किंतु मलेरकोटला के शेर मुहम्मद खां ने कहा कि इन मासूम और बेगुनाह बच्चों को छोड़ देना चाहिए। वज़ीर ख़ान के एक पेशकार सुच्चा नंद ने साहिबज़ादों को फुसलाते हुए कहा कि यदि उन्हें छोड़ दिया जाये तो वे क्या करेंगे? बाबा ज़ोरावर सिंघ ने तुरंत जवाब दिया कि वे गावों और जंगलों में जाकर सिक्खों को एकजुट करेंगे और फौज बनाकर अन्यायी मुगलों से युद्ध करेंगे। सुच्चा नंद जो एक बड़ा ही धूर्त और चालाक व्यक्ति था ने साहिबाज़ादों से बोला कि तुम लोग हार जाओगे और पकड़े जाओगे। मान लो फिर तुम्हें छोड़ दिया गया तो इस बार क्या करोगे! दोनों साहिबज़ादों ने एक स्वर से उत्तर दिया कि वे तब तक लड़ते रहेंगे जब तक इस ज़ालिम राज्य का अंत नहीं कर देते।

सच को मिटाओगे तो मिटोगे जहान से।
डरता नहीं अकाल शहनशह की शान से।

सुच्चा नंद इस बातचीत से यह साबित करना चाहता था कि यदि श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के साहिबज़ादों को छोड़ दिया जाता है तो वे सरकार के लिए खतरा साबित होंगे? दोनों साहिबज़ादों को वापिस माता गुजरी जी के पास ठीक से सोच-विचार कर लेने की हिदायत के साथ भेज दिया गया। साहिबज़ादों ने जब माता

गुजरी जी को वज़ीर ख़ान की कचहरी में घटित हुई सारी बातें बताईं तो माता जी गर्व से भर उठीं और उनके मस्तक चूमते हुए उन्हें ढेरों आशीर्वाद दिए तथा परमात्मा पर भरोसा बनाए रखने को कहा। दूसरे दिन साहिबज़ादों को पुन: कचहरी में पेश किया गया और उन्हें किसी तरह इस्लाम स्वीकार कर लेने के लिए टाल दिया। माता गुजरी जी रात भर दोनों साहिबज़ादों को अपने सीने से लगाए उनमें इतिहास लिखने की ताकत भरते रहे। उन्हें एहसास हो गया था कि यह अपने लाड़ले पोतों के साथ उनकी आखिरी रात है और कल सुबह का सूरज उन्हें एक-दूसरे से अलग कर देने वाला है। उन्हें अपने पुत्र की ये अनमोल धरोहर बचती नहीं दिख रही थीं किंतु श्री गुरु नानक देव जी के मिशन को एक नई ऊंचाई मिलती नज़र आ रही थी। सुबह बाबा ज़ोरावर सिंघ और बाबा फ़तहि सिंघ को विदा करना माता गुजरी जी के लिए बड़ा कठिन समय था। उन्हें अपने पोतों को साहस से भरपूर भी करना था कि वे हर हाल में अडिग रहकर गुरु-घर की शान कायम रख सकें और पोतों से सदा के लिए बिछुड़ने का असहय दुख भी अंदर ही पी जाना था। उन्हें यह भी नहीं मालूम था कि श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी और बाकी परिवार और सिक्ख कहां हैं और किस हाल में हैं? वज़ीर ख़ान की कचहरी में पहुंचकर जब दोनों साहिबज़ादों ने फिर अपने फौलादी इरादों का परिचय दिया तो मुफ्ती से उन्हें दीवार में चिनवा दिये जाने का फतवा दिलवा दिया गया। नौ वर्ष और सात वर्ष के मासूम बच्चों को दीवार में चिनवा दिए जाने का फतवा सारी मानवीय संवेदनाओं और समझ को चिनवा देने जैसा था, जिसके बाद कुछ ऐसा नहीं बचता था जिसे जीवन का नाम दिया जा सके। सारी चेतना और भावना मृत होने के बाद ही ऐसा निर्णय लिया जा सकता था। मासूम साहिबज़ादों के गिर्द दीवार बनते सभी देखते रहे किंतु जीवित होने के लक्षण किसी में भी प्रकट नहीं हुए। ऐसे हुक्मरानों को कैसे दिखता कि यह गुरु-घर की शान की गवाही देने वाली दीवार बन रही है, जिसकी छाया में वे सभी गुम हो जाने वाले हैं और आने वाले वक्त में उनका नामो-निशान तक नहीं होगा जबकि इन नन्हें, मासूम साहिबज़ादों को याद करने वाले करोड़ों लोग होंगे और युगों-युगों तक इनकी गौरव गाथा गाई जाती रहेगी। बाबा ज़ोरावर सिंघ और बाबा फ़तहि सिंघ ने पूरी आन-बान से खुद को परमात्मा के चरणों में अर्पित कर दिया।

हम जान दे के औरों की जानें बचा चले।
सिक्खी की नीव हम हैं सरों पर उठा चले।
गुरिआई का है किस्सा जहां में बना चले।
सिंघों की सलतनत का है पौदः लगा चले।

साहिबज़ादों ने अपने पिता श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के सुयोग्य पुत्र और श्री गुरु नानक देव जी के घर के सच्चे सिक्ख होने का पूरा फ़र्ज़ अदा किया। माता गुजरी जी को जब साहिबज़ादों की शहादत समाचार मिला तो उन्हें लगा कि उनका फ़र्ज़ भी यहीं तक था। ठंडे बुर्ज की सर्द रातों में अपने लाड़ले पोतों को अपने आंचल की गर्माहट और गुरु इतिहास की ऊर्जा से संवारने वाली माता गुजरी जी शहादत को प्राप्त हो गए सरहिंद की धरती बेहद शर्मिंदा हुई। बाद में बाबा बंदा सिंघ जी ने इसे पापों से मुक्त किया और वज़ीर ख़ान का नामो-निशान मिटा दिया। आज सिक्ख कौम की चमक में उस जाहो-जलाल का भी अहम योगदान है जो माता गुजरी जी ने सरहिंद के ठंडे बुर्ज में अपने धैर्य और संकल्प से बाबा ज़ोरावर सिंघ व बाबा फ़तहि सिंघ के अंदर पैदा किया था। 

महान शहीद : माता गुजरी जी

*-डॉ. रछपाल सिंघ**

सिक्ख इतिहास शहीदों का इतिहास है और सिक्ख पंथ की नींव श्री गुरु नानक देव जी द्वारा 'शहीदी आधारशिला' पर ही रखी गई है :

जउ तउ प्रेम खेलण का चाउ ॥
सिरु धरि तली गली मेरी आउ ॥
इतु मारगि पैरु धरीजै ॥
सिरु दीजै काणि न कीजै ॥ *(पन्ना १४१२)*

द्वितीय पातशाह श्री गुरु अंगद देव जी ने भाई मल्लू जी के पूछने पर उपदेश किया था "भाई मल्लू! युद्ध करते समय कम-ज्यादा की प्रवाह नहीं करनी।" श्री गुरु अरजन देव जी ने भी *'पहिला मरण कबूल जीवणु की छडि आस ॥'* का उपदेश दिया और साथ ही फरमाया, 'जो शस्त्र का वार सहते शहीद होता है, उसको इतना बड़ा परम-आनंद प्राप्त होता है जो हज़ारों वर्ष तप करके भी किसी को भी नहीं मिलता।

इसी शहीदी परंपरा के सम्बंध में छठम् पातशाह श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने वचन किया कि पास आये महिमान के लिए 'देग' और सिर फिरे के लिए 'तेग' प्रत्येक गुरसिक्ख के घर सदैव तैयार मिलनी चाहिए।

गुरबाणी और कुर्बानी के इस महान पंथ में पहले सतिगुरु साहिबान ने स्वयं और फिर सिक्खों ने इस लहर पर चलकर शहीदी परंपरा को जन्म देकर आगे बढ़ाया।

धर्म-युद्ध में जूझते हुए सिंघों की बात ही दुनिया से अलग (निराली) किस्म की थी। न तो उनमें गुस्से या क्रोध वाली कोई बात थी और न ही बदला लेने वाली। मैदान-ए-जंग में सिंघ कभी भी अपने आप को अकेला नहीं थे समझते, बल्कि सर्व-शक्तिमान परमात्मा को वह सदैव ही अपने अंग-संग समझते थे। अपने गुरु और सच में उनका दृढ़ विश्वास था। तभी तो सिंघ अकेला कभी भी नहीं होता और वह सदैव ही चढ़दी कला में रहकर सदैव सफलता प्राप्त करता है।

सिंघों के विलक्षण धर्म-युद्ध के बारे में कहा जाता है कि अगर युद्ध में जूझते दुश्मन की दसतार उत्तर जाती थी तो सिंघ कृपाण मियान में डाल लेते थे और कहते थे-- "ए भले पुरष! आपणी पग्ग संभाल, मैं तेरी इज्ज़त लाहुण नहीं आया।" युद्ध में सिंघ कभी भी किसी औरत के जेवर को भी हाथ नहीं लगाते थे और न ही किसी औरत को बुरी नज़र के साथ ही देखते थे। औरत, बच्चे या वृद्ध पर कभी भी सिंघ वार नहीं करते थे और न ही युद्ध-क्षेत्र में भागते हुए पर वार ही करते थे।

यह था सिक्खों का विलक्षण धर्म-युद्ध, जिनके तेज प्रताप के कारण ही सिंघों के साथ कोई भी दुश्मन न अड़ सका, दस-दस लाख की फौजों के लश्कर बुरी तरह मार खाकर भागे और खालसे की हर मैदान में फ़तहि हुई। आकियों, दुष्टों और अहंकारियों का विनाश हुआ और 'अकाल पुरख की फौज' के बोल-बाले हुए।

माता गुजरी जी की महानता किसी से

**पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, क्षेत्रीय खोज केंद्र, गुरदासपुर (पंजाब)-१४३५२१*

अदृश्य नहीं है, स्वयं तो माता जी महान शहीद थे ही परंतु जिसका समूचा ख़ानदान ही महान शहीद हो, ऐसी शहीद माता को शिरोमणि शहीद माता कहा जाता है।

इस शहीदी खानदान की अध्यक्ष, शहीद माता गुजरी जी का जन्म भाई लाल चंद जी और माता बिशन कौर जी के गृह में जलंधर के समीप करतारपुर में हुआ। आप जी का विवाह नवम् पातशाह, हिंद की चादर, धर्म हेतु महान साका करने वाले श्री गुरु तेग बहादर जी के साथ हुआ। जब डोली उठी तो माता बिशन कौर जी ने सिर पर प्यार देते हुए समझाया, "गुजरी! पति नू परमेश्वर जान के सेवा करीं, इसदे बराबर होर कोई सेवा नहीं।"

पति सम ईस पछान कै, हे पुत्तरी कर सेव।
पति परमेश्वर जानीऐ, और तुछ लख ऐव।
(गुर बिलास)

माता बिशन कौर और पिता लाल चंद जी ने अरदास की, "हे सतिगुरु जीउ! गरीब दी लाज रखिउ। गुरु (हरिगोबिंद जी) दे घरों सदा निघ ही आवे, सेक न आवे।"

माता गुजरी जी की सुंदरता बेमिसाल थी। लंबा कद, सुंदर नयन, हंसमुख चेहरा, मिष्ठ भाषा, आवाज़ सहज अवस्था वाली, मन की निर्माणता, शर्म, हया और विनम्रता की सुंदर मूर्त थे, माता गुजरी जी हर समय आप जी सास, ससुर और घर आई साधसंगत की सेवा में लीन रहते थे कि आप ने कभी किसी को शिकायत का मौका ही नहीं दिया।

आप जी का विवाह हुए अबी थोड़ा समय ही हुआ था, जब श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब को करतारपुर की जंग बेशुमार मुगल सेना के साथ लड़नी पड़ी। इस भयानक जंग को नव-विवाहित आई, माता गुजरी जी ने घरों की छत्तों पर चढ़कर आंखों से देखा। पति को दुश्मनों का डट कर मुकाबला करने के लिए बहुत प्रोतसाहन दिया। ऐसी धार्मिक, बहादुर और निर्भय शख़्सियत के मालिक थे माता गुजरी जी। श्री गुरु तेग बहादर जी, गुरु-पिता के हुक्म अनुसार, माता नानकी जी और माता गुजरी जी के साथ बाबा बकाला में आ गए। माता गुजरी जी और श्री गुरु तेग बहादर जी परमात्मा का सिमरन किया जिसका ज़िक्र श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने 'बचित्र नाटक' में भी किया है :

तात मात मुर अलख अराधा ॥
बहु बिधि योग साधना साधा ॥
तिन जो करी अलख की सेवा ॥
ताते भए प्रसंन गुरदेवा ॥

यही पर बस नहीं, कश्मीरी पंडितों की विनती पर श्री गुरु तेग बहादर जी ने श्री अनंदपुर साहिब छोड़कर, दिल्ली जाकर शहीद होना तथा माता गुजरी जी का प्रभु हुक्म दृढ़ रहना, हर दुख-सुख' को सम (बराबर) करके जानना, एक स्त्री के लिए कोई छोटी-सी बात नहीं है। जब महान शहीद पिता का शीश दिल्ली के चांदनी चौक में उठाकर भाई जैता जी कीरतपुर साहिब लेकर आए तो श्री गुरु तेग बहादर साहिब जी का शीश देखकर माता गुजरी जी ने 'गुरु-पति' को माथा टेका। वाहिगुरु का शुक्राना करते हुए बचन कहे, 'तुहाडी निभ आई, इह कृपा करो कि मेरी भी निभ जाए।' आंखों में आंसू नहीं, न ही गम था बल्कि माथे और चिहरे से अकाल पुरख का शुक्राना ही पढ़ा जा सकता था।

श्री अनंदपुर साहिब में 'खंडे की पाहुल' और खालसा सृजना समय' गुरु जी द्वारा शीश मांगने पर बहुत-से श्रद्धालु और मसंद दौड़कर माता गुजरी जी के पास फरियादी हुए थे परंतु माता जी अंतरयामी दूर दृष्टि के मालिक थे।

उन्होंने श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की इस अनोखे खेल में दख़ल न दिया। श्री अनंदपुर साहिब की प्रथम जंग (१७०० ई) में विजय प्राप्त कर जब साहिबज़ादा अजीत सिंघ जी आए तो माता गुजरी जी ने कलावे में लेकर, अत्यंत प्यार व शाबाश दी।

गंगू रसोईए ने जब नमक हरामी करके माता जी की धन, हीरों वाली गठड़ी छिपा ली तो माता जी ने बहुत प्यार और धैर्य के साथ गंगू से कहा था, "गंगू! तूं इंज क्यों कीता, जे तूं मेरे कोलों उंझ मंग लेंदा ता किहड़ी मैं नांह कर देणी सी?"

साहिबज़ादों को सूबे की कचहरी में लेने आए सिपाही देखकर माता गुजरी ने, छोटे पोतों के सुंदर मुख धोए, सिर पर दसतारे सजाई और कहा "बेटा! तुसीं श्री गुरु तेग बहादर जी दे पोतरे ते श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी दे पुत्र हो। किसे अगगे जा के सिर नहीं झुकाउणा; गज्ज के फ़तहि बुलाउणी, आपना धर्म नहीं छड्डणा, किसे प्रकार दे वी लालच विच नहीं आउणा, किते पिउ-बाबे दी पग्ग नूं लाज न लग्गे।" साहिबज़ादों ने जानें कुर्बान तो कर दी, नींव में तो चिने गए परंतु इसलाम कबूल नहीं किया। यह थी दादी मां गुजरी जी की शिक्षा उपदेश का चमत्कार। बच्चों की शहीदी सुनकर माता जी ने परमात्मा का शुक्राना किया, और स्वयं भी कष्ट सहारते हुए शहीदी प्राप्त कर गए।

माता गुजरी जी, साहिबज़ादा बाबा ज़ोरावर सिंघ और साहिबज़ादा बाबा फ़तहि सिंघ, तीनों का इक्ट्ठे ही अंतिम संस्कार, गुरुद्वारा साहिब ज्योति सरूप वाली जगह, फतहिगढ़ साहिब (सरहिंद) में किया गया।

निं:संदेह माता गुजरी जी जैसी अमर शहीद और लासानी कुर्बानी वाली महान शख़्सियत दुनिया भर के इतिहास में कहीं भी नज़र नहीं आती जो अपना आपा, अपना सारा खानदान अर्थात् पति, पुत्र, पोते, भाई और नाति देश धर्म हेतु कुर्बान करवाकर प्रभु-हुक्म में अडोल रही हो। ❂

शहीदी साका

(शेष पृष्ठ १३ पर)

उसने इन्हे ज़िंदा दीवारों में चिन देने का आदेश दे दिया। तत्काल ईटें और गारा मंगवाए गए और साहिबज़ादों को खड़ा कर दीवार चिनना आरंभ कर दिया। जैसे जैसे रदे पे रदा चढ़ता जाता, उन्हें इस्लाम धर्म कबूल करने के लिए कहा जाता परंतु उनका वही उत्तर सिर्फ इन्कार। जब दीवार गर्दनों तक पहुंची तो साहिबज़ादे बेहोश हो गए थे। रज़ा भगवान की, तो झट से ही वह दीवार दड़-दड़ करती नीचे गिर पड़ी और बेहोश साहिबज़ादे भी ज़मीन पर आ गिरे। उस समय सभी व्यक्ति जो वहां उपस्थित थे कांप उठे। वज़ीर खान ने कहा कि कोई है जो इन बच्चों की गर्दन उड़ा दे' सब के सर नीचे। जब और किसी ने कोई उत्तर न दिया तो साशल बेग और बाशल बेग जल्लादों ने, जो किसी दोष के कारण नौकरी से हटा दिए गए थे, कहा कि अगर हमारा कसूर माफ हो जाए तो हम तैयार हैं।

वज़ीर खान ने यह बात कबूल कर ली। बस फिर क्या देरी थी। उन जल्लादों ने मासूम बच्चों साहिबज़ादा ज़ोरावर सिंघ और साहिबज़ादा फ़तहि सिंघ को अत्यधिक निदर्यता से कत्ल कर दिया और जब छोटे साहिबज़ादों की शहादत का पैगाम माता गुजरी जी तक पहुंचा तो वो भी परमात्मा के चरणों में जा विराजमान हुए। ❂

मैं धरती श्री माछीवाड़ा साहिब की

*-सिमरजीत सिंघ**

मैं श्री माछीवाड़ा साहिब की धरती ने अपनी ज़िंदगी में बहुत उतार-चढ़ाव देखे हैं। आजकल मैं ज़िला लुधियाना की तहसील समराला का एक प्रसिद्ध कसबा हूं तथा सिक्ख इतिहास में मेरा विशेष स्थान है। मैं लुधियाना शहर से लगभग ४३ किलोमीटर की दूरी पर स्थित हूं किंतु कभी मैं एक अनदेखी-सी धरती हुआ करती थी। पहले सतलुज दरिया मेरे साथ घर्षण करके गुज़रता था परंतु अब वह यहां से रास्ता बदलकर ९ किलोमीटर की दूरी पर राहों वाले पत्तण के पास से गुज़रता है। मुझे अपने जन्म व नामकरण के बारे ज्यादा जानकारी नहीं है परंतु मैंने बुजुर्गों को बातें करते हुए सुना है कि मुझे मलिक माछी ने आबाद किया है, जिसके बाद मेरा नाम 'माछीवाड़ा' पड़ गया। कहते हैं कि मेरे इस कसबे में 'माछीयों' का निवास स्थान होने के कारण मेरा नाम 'माछीवाड़ा' पड़ा है। मैं एक समय मुसलमानों की आबादी वाला बहुत प्रसिद्ध कसबा बनी थी। मुसलमानों के समय की चाहे कोई खास निशानियां अब मौजूद नहीं हैं परंतु फिर भी एक कुएं व एक मसजिद की नींहें, एक पूरी मसजिद पुरातन समय की निशानियों के रूप में आज भी मौजूद हैं। पंजाब में उस समय निर्माण वाले पत्थर की कमी थी, जिस लिए ज्यादातर निर्माण ईंटों से किया जाता था परंतु यह मसजिद भूरे पत्थर से निर्मित की गई थी। मसजिद के कई भागों पर फूलों की सजावट की हुई है। इस पर ग्लेज़ड नीली टाइलें भी लगी हुई हैं। मसजिद के तीन दरवाज़े हैं परंतु गुबंद एक ही है। मसजिद के ऊपर लाल पत्थर से लिखी एक इबारत के मुताबिक इसका निर्माण १५१७ ई में फ़तहि मलिक ने करवाया था। फ़तहि मलिक के पिता का नाम मलिक माछी था।

अब मैं आपको अपनी तकदीर पलटने की गौरवगाथा सुनाने लगी हूं। बात दिसंबर, १७०४ ई की है। उन दिनों में जब मेरी दिख ही उजाड़ वाली जगह पर थी और ऊबड़-खाबड़ रेत के टिब्बों ने मेरी दिख ही बिगाड़ रखी थी। चारों और कंडियाली झाड़ियों की भरमार थी। सर्दी की ऋतु थी। कहरों की सर्दी पड़ रही थी, जिस रात दीन-दुनी के मालिक दशमेश पिता श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी इकेले ही हाथों में नग्न शमशीर, तन पर चोला भी काटों में फंसकर फटा हुआ था और नंगे पांव मुझे अपना विस्मादी चरण-स्पर्श बख्शकर सदा-सर्वदा के लिए भाग्यशाली बनाने के लिए आ विराजमान हुए; अंधेरा इतना कि हाथ को हाथ मारने से नहीं दिखता। मेरे पातशाह इतनी सर्दी में बिना गर्म कपड़े के यहां गुलाबे-पंजाबे के कुएं पर आ गए। गुरु पातशाह जी ने कुएं की टिंड से कुएं से पानी भरा और टिंड खोलकर पानी पिया और टिंड का ही तकिया लगाकर इस तरह सो गए जैसे कोई बड़ा कर्ज़ा उतारकर आए हों।

सुबह (अमृत बेला) गुरु पातशाह जी उठे, अकाल पुरख का सिमरन किया तथा उनकी मीठी आवाज़ सारे बाग की फ़िज़ा में इस तरह फैल गई जिससे परिंदे भी झूम उठे। गुरु जी ने

*संपादक, 'गुरमति ज्ञान' एवं 'गुरमति प्रकाश'।

पावन बाणी उच्चारण की :

मित्र पिआरे नूं हालु मुरीदां दा कहणा ॥
तुध बिनु रोगु रजाईआं दा ओढण नाग निवासां दे रहणा ॥
सूल सुराही खंजरु पियाला बिंग कसाईआं दा सहणा ॥
यारड़े दा सानूं सत्थरु चंगा भट्ठ खेड़िआ दा रहणा ॥

इस मधुर आवाज़ को सुनकर तीन सिक्ख भी आ पहुंचे। उन्होंने गुरु जी को सत्कार सहित फ़तहि बुलाई। ये भाई धरम सिंघ, भाई दइआ सिंघ तथा भाई मान सिंघ थे। ये गुरु जी के साथ ही पांच प्यारों का हुक्म मानकर चमकौर की गढ़ी से निकले थे परंतु घमासान युद्ध के कारण व अंधेरी काली रात्रि में एक-दूसरे से बिछुड़ गए थे और गुरु जी द्वारा बताई गई दिशा की निशानी की ओर एक-दूसरे को ढूंढते यहां पहुंचकर आपस में मिल गए थे। ये अभी जल-पानी छककर बैठे ही थे कि बाग के माली ने बाग के मालिक गुलाब चंद को जा बताया कि बाग में कोई अजनबी राहगीर आकर ठहरा हुआ है।

भाई गुलाब चंद अपने भाई पंजाब चंद के साथ आ हाज़िर हुआ। जब उन्होंने देखा कि ये तो कलगियां वाले पातशाह, श्री अनंदपुर साहिब वाले गुरु दशमेश पिता ने आकर उनके बाग को भाग्यशाली बना दिया है तो वो गुरु जी के चरणों में गिर पड़े तथा उनकी इस दशा का कारण पूछा। ये भाई गुलाब चंद तथा पंजाब चंद गुरु-घर के मसंद थे, जब संगत की शिकायत पर गुरु जी ने १६९९ ई की वैसाखी में मसंद प्रथा खत्म करके उनको उनके किए की सज़ा देकर खालसा पंथ की सृजना की, तब गुरु जी ने इनको भले पुरुष जान कुछ नहीं कहा था। ये दोनों भाई श्री माछीवाड़ा साहिब आकर रहने लग गए तथा कृषि कार्य करने लगे, यह बाग इनका ही था। गुरु जी को तीनों सिक्खों ने निवेदन किया कि सच्चे पातशाह जी! आप जी जहां तक कैसे पहुंचे कृप्या हमें इससे अवगत करवाएं।

गुरु जी ने बताया कि किस प्रकार उन्होंने चमकौर की गढ़ी छोड़कर दुश्मनों को वंगारा तो वो अंधेरे में भयभीत होकर आपस में लड़-मरने लगे तथा गुरु जी अंधेरे में जंगल के रास्ते पड़ गए। मुगल फौज ने चारों ओर उनका हुलिया (मुखाकृति) बताकर ढिंढोरा पिटवाया हुआ था कि गुरु जी को ज़िंदा या मुर्दा पकड़ाने वाले को बहुत बड़ा ईमान दिया जाएगा। उनको चलते-चलते दिन चढ़ आया था। रास्ते में उनको खेड़ी गांव के अलफू तथा गामू दो गुज्जर भाई भैंसे चराते मिल गए। उन्होंने गुरु जी को पहचान लिया और उन्होंने ऊंची-ऊंची शोर मचाना शुरू कर दिया वो देखें! सिक्खों का गुरु जा रहा है। गुरु जी ने उनको पांच-पांच सोने की मुहरें देकर शोर मचाने से रोका। उन्होंने मुहरें भी ले लीं किंतु शोर मचाना बंद न किया। जब वो शोर मचाने से न हटे तो उनको किए की सज़ा कृपाण से झटकाकर देनी पड़ीं।

गुरु जी जंगल के बीचो-बीच चले जा रहे थे क्योंकि जंगल के बाहर चारों ओर से मुगल फौज ने घेरा डाला हुआ था। चलते-चलते जब प्रभात होने लगी तो मुर्गे के बांग देने की आवाज़ सुनी तथा उन्होंने अंदाज़ा लगा लिया के समीप ही कोई गांव है। जब वो थोड़ा पास गए तो पता चला कि वह तो बहिलोलपुर लोधी गांव में पहुंच गए हैं। यह पक्का गांव था और इसको बहिलोल लोधी ने बसाया था उनको याद आया कि यहां तो एक पूरन मसंद होता था। गुरु जी पूरन मसंद के घर चले गए। घर का बड़ा

दरवाज़ा खटखटाया तो ड्योढ़ी में से नौकर जिऊणे ने उठकर कुंडा खोला तथा पूछा कि इतनी सुबह-सुबह कौन है? उन्होंने बताया कि मैं श्री गुरु गोबिंद सिंघ हूं तथा यहां कुछ दिनों के लिए रहने आए हैं। जिऊणा उनको चारपाई पर बैठाकर दौड़ा-दौड़ा पूरन मसंद को बताने के लिए गया तो उसने गुरु जी को घर रखने से इन्कार कर दिया, जिस पर जिऊणे को बहुत गुस्सा आया। जब गुरु जी को इस बात का पता चला तो वो उठकर आगे की ओर चल दिए। गुरु जी जंगल में एक जंड के वृक्ष तले ठहर गए और वहीं थोड़ी देर आराम किया ताकि रात का अंधेरा होने पर आगे का सफ़र किया जाए। उनके पांव थकान के कारण सूजे हुए थे परंतु हौसला बुलंद था। इस स्थान पर आजकल गुरुद्वारा जंड साहिब बना हुआ है। गुरु जी जंगल के रास्ते आगे की ओर चल पड़े। जंगल का रास्ता करीरों, कीकरों, मल्हों के कांटों से भरा पड़ा था। गुरु जी के नंगे पांव कांटे चुभ-चुभ कर ज़ख़्मों से भरे पड़े थे और वो आगे ही आगे चलते जा रहे थे। चलते-चलते वो बेरियों-करीरों के झुण्ड के पास पहुंच गए। उन्होंने सुरक्षित जगह जान कुछ समय आराम किया तथा धतूरे के फूल खाकर गुज़ारा किया। यहां आजकल गुरुद्वारा श्री झाड़ साहिब बना हुआ है।

इस तरह चलते-चलते गुरु जी रातों के अंधेरे में मुझ अभाग्य धरती को भाग्यशाली बनाने के लिए इस बाग में पहुंच गए।

गुरु जी की सारी वार्ता सुनकर भाई दइआ सिंघ ने कहा कि गुरु जी! मैं आपके बताए अनुसार इस दिशा की ओर ही आ रहा था तो रास्ते में मुझे बहिलोलपुर वाले मसंद का सेवक जिऊणा मिला था। वो बहुत ही भला पुरुष है; उसने मुझे बताया कि गुरु जी इस दिशा की ओर गए हैं। उसने मुझे बताया कि पूरन मसंद ने गुरु जी से गलत व्यवहार किया है, उससे बर्दाश्त नहीं हुआ जब कि उसकी पत्नी बहुत नेक दिल औरत है। उसने पूरन को समझाने की बहुत कोशिश की परंतु उसने एक न सुनी और आप जी को ठंडी बर्फीली रात्रि में एक दिन भी रहने की जगह नहीं दी जबकि ये सारे महल गुरु की कृपा से ही बने हुए हैं और जिऊणे ने उसकी नौकरी छोड़ दी है। उसने यह भी बताया है कि दूसरे दिन सुबह जब दिलावर ख़ान फौजदार जो बहिलोलपुर का चौधरी व मालिक था, को यह पता चला कि आप जी बहिलोलपुर आए थे तो उसने पूरन मसंद को बुलाकर बांध लिया तथा उसको खूब पीटा। पूरन शरीर का मोटा था तथा ऐशप्रस्त था, जिस कारण लाठियों की मार सहना उसके बस की बात नहीं थी।

भाई गुलाब चंद और उसका भाई गुरु जी को अपने घर ले गए। गुरु जी ने वो रात अपने तीनों सिक्खों सहित भाई गुलाब चंद के घर के चुबारे में काटी। श्री माछीवाड़ा साहिब में ही गुरु जी के श्रद्धालु दो पठान भाई गनी खां तथा नबी खां रहते थे। ये दोनों भाई गुरु साहिब के पास घोड़े लेकर जाया करते थे। ये गुरु जी को आकर मिले तथा इस समय गुरु जी की बहुत सेवा की। जब मुगल फौज ने श्री माछीवाड़ा साहिब के जंगल को चारों ओर से घेरा डाल लिया तो दोनों भाई गुरु साहिब को अपने घर ले गए। इन्होंने भाई दइआ सिंघ, भाई मान सिंघ तथा भाई धरम सिंघ से मिलकर योजना बनाई कि गुरु जी को 'उच्च के पीर' के भेस में फौज के घेरे से निकाला जाए।

'उच्च' एक कसबा है, जो बहावलपुर (पाकिस्तान) में लगभग ६० किलोमीटर की दूरी पर है। इसका पहला नाम 'देवगढ़' था जो राजा

देवगढ़ ने बसाया था। बारहवीं शताब्दी के अंत तक सय्यद जलालुदीन बुखारी ने देवगढ़ पर हमला कर दिया। राजा हार कर मारवाड़ को भाग गया। बुखारी ने कस्बे को खूब लूटा तथा राजे की पुत्री सुंदरपरी को अपनी रानी बनाकर वहीं एक ऊंची जगह पर किला बनाकर रहने लग गया। वह किला ऊंचे स्थान पर होने के कारण उसका नाम 'उच्च' पड़ गया तथा इसके नाम के साथ यह कस्बा प्रसिद्ध हो गया। इस कस्बे पर सय्यदों के कब्ज़े के कारण बहुत-से प्रमुख सय्यद तथा पीर-फकीर यहां आकर रहने लग गए, जिस कारण सत्कार के रूप में 'उच्च शरीफ' कहा जाने लग गया। यहां पर सय्यद पीर आम तौर पर नीले वस्त्र पहनते थे और सर पर लंबे केश रखते थे। माछीवाड़े की ही निवासी एक बुजुर्ग माता हरिदेई थी जो गुरु जी की परम श्रद्धालु थी। उसने गुरु जी के लिए अपने हाथों से कातकर एवं बुनकर वस्त्र तैयार किए थे। उसने गुरु जी को यह वस्त्र दिए। भाई गनी खां, भाई नबी खां तथा सिक्खों ने यह वस्त्र रंगरेज़ से नीले रंग में रंगवाकर गुरु जी को पहनाकर उच्च के पीर का भेस बनाकर तथा गुरु जी को एक पलंग पर बैठाकर पालकी की तरह कंधों पर उठा लिया। भाई मान सिंघ जी चंवर करने लग गए। रास्ते में वे लोगों के पूछने पर कहते जा रहे थे कि यह 'उच्च का पीर' है।

रास्ते में जब मुगल फौज ने घेर लिया तो गुरु जी ने उस्ताद काशी पीर मुहम्मद से उनकी पहचान (शनाख़्त) करवाई गई, जिसने कहा कि यह सच में ही उच्च का पीर है। इस तरह गुरु जी मुगल फौज के घेरे से सही-सलामत निकल गए। गुरु जी ने प्रसन्न होकर भाई गनी खां और भाई नबी खां को सोने के कड़ों की जोड़ी दी तथा संगत के नाम एक हुक्मनामा बख़्शिश किया, जिसमें गुरु जी ने दोनों भाइयों को अपने पुत्रों के समान समझा। इस लिए सिक्खों में इन भाइयों तथा फिर इनकी संतान का भी बहुत सम्मान है। सिक्ख रियासतों के समय इनके नाम ज़मीन भी लगी रही है। भारत-पाकिस्तान के बंटवारे के समय इनका खानदान चाहे पाकिस्तान में चला गया है परंतु इनके पुरातन घर में गुरुद्वारा साहिब कायम है। श्री माछीवाड़ा साहिब में इनकी याद में एक गेट भी मौजूद है।

भाई गुलाब चंद के बाग में जहां कलगीधर पातशाह पहले ठहरे थे, जिस जगह भाई धरम सिंघ, भाई मान सिंघ तथा भाई दइआ सिंघ चमकौर साहिब से आकर गुरु जी से मिले, वहीं गुरुद्वारा चरन कंवल साहिब सुशोभित है, जो कस्बे से एक मील पूर्व दिशा की तरफ है। महाराजा रणजीत सिंघ द्वारा इस पावन स्थान के नाम पर २७० बीघे ज़मीन भी लगी हुई थी।

आजकल इस गुरुद्वारा साहिब का प्रबंध शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर पास है। शिरोमणि गु. प्र. कमेटी सुयोग्य ढंग से रख-रखाव के लिए स. गुरमीत सिंघ मैनेजर नियुक्त किया गया है, जिसकी देखरेख तले गुरुद्वारा साहिब के दर्शनों के लिए आने वाली संगत के लिए प्रत्येक सुविधा का प्रबंध किया गया है। गुरु का लंगर हर समय मिलता है। रात बिताने के लिए आधुनिक सुविधा वाले 'कलगीधर निवास' का निर्माण किया गया है।

यहां के ही एक उत्साही नौजवान स. जगदीश सिंघ चित्रकार ने श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के जीवन से सम्बंधित सुंदर तसवीरें बनाकर गुर-इतिहास से अवगत करवाने हेतु बहुत ही बहुमूल्य संग्राहालय बनाया है। दूर-दूरस्थ से आने वाली संगत गुरु इतिहास से अवगत हो प्रफुल्लित हो उठती है। ☸

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की बाणी में सामाजिक क्रांति के उद्‌बोधन

*-डॉ. भगवंत सिंघ**

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का जन्म गुरु शब्द रत्नाकर महान कोश के अनुसार १६६६ ई. दर्शाया गया है। यह वह समय था जब हिंदोस्तान पर मज़बूत मुगल सलतनत का राज्य था। उस समय औरंगज़ेब दिल्ली का बादशाह था। औरंगजेब ने अपने पिता बादशाह शाहजहां को कैद करने के उपरांत, अपने भाईयों का कत्ल करके तख़्त पर कब्ज़ा कर लिया था। उस समय निरंकुश शासक का चारों तरफ दबदबा था। राज्य सत्ता को प्राप्त करने के लिए औरंगज़ेब ने कट्टर मुसलमानों की मदद ली क्योंकि यह बादशाह शाहजहां का तीसरा पुत्र था जिसका तख़्त पर सीधे तौर पर हक नहीं बनता था। कट्टरपंथियों ने औरंगज़ेब को आलमगीर का ख़िताब दिया जिसको उसने बहुत खुशी के साथ धारण किया। राज्य सत्ता पर काबज़ शक्तियां सदा ही अपने विरोधियों का दमन करती हैं। इस प्रकार करते हुए वो जनसाधारण का नुकसान भी कर देती हैं। ताकत के नशे में राज्य धर्म को भी भूल बैठते हैं। इसी प्रकार ही औरंगज़ेब के साथ हिंदोस्तान में हो रहा था। उसने हिंदुओं के मेले, मंदिर और उत्सवों को बंद कर दिया और अकबर का हटाया हुआ जज़िया हिंदुओं पर पुन: लगा दिया गया। ऐसे अत्याचार से दुखी जनता और कश्मीरी पंडितों ने श्री अनंदपुर साहिब में श्री गुरु तेग बहादर साहिब जी के दरबार में पहुंचकर मदद की गुहार लगाई, जहां बहुत गंभीर चर्चा हुई।

बाल गोबिंद राय जी की सलाह और विचार-चर्चा के निष्कर्ष-स्वरूप श्री गुरु तेग बहादर जी ने अपनी शहादत दी। यह एक अद्वितीय और दिल को झकझोरने वाली घटना है कि जब दिल्ली से श्री गुरु तेग बहादर साहिब जी का शीश लेकर भाई जीवन सिंघ जी श्री अनंदपुर साहिब पहुंचे तो नौ वर्षीय बाल श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की मनोवस्था क्या होगी? उन्होंने भाई जीवन सिंघ जी को गले लगाकर "रंघरेटा गुरु का बेटा" कहकर बख़्शिश की। यह एक असाधारण व्यक्तित्व की मिसाल है। गुरु जी ने तभी निर्णय कर लिया कि हिंदोस्तान की मुर्दा कौम को जगाने के लिए शस्त्रबद्ध करना और अलग पहचान निर्धारित करना अति आवश्यक है। आपकी बचपन से ही शस्त्र विद्या में गहरी दिलचस्पी थी। आपने १६९९ ई में श्री केसगढ़ साहिब के स्थान पर एक विशाल दीवान सजाया जिसमें हिंदोस्तान भर से जनता शामिल हुई।

यहां आपने बहुत प्रभावशाली तकरीर की। जुल्म के विरुद्ध डटने के लिए शीश की मांग की। इस प्रकार पांच सिक्ख चुनकर उन्हें खंडे बाटे का अमृत पिलाकर पांच ककारों के धारणी सिंघ सजाए, जिनमें फिर आपने अमृत छका। इस प्रकार न्यारे खालसे ने सृजना की। सन् १६९९ ई को जो पांच प्यारों को सजाया था उनके नाम-- भाई दइआ सिंघ जी, भाई धरम सिंघ जी, भाई हिम्मत सिंघ जी, भाई मोहकम

**शोध अधिकारी, भाषा विभाग, पटियाला, फोन: +९१९८१४८५१५००*

सिंघ जी, भाई साहिब सिंघ जी।

हिंदोस्तान के विभिन्न क्षेत्रों से यह पांच प्यारे पांच ककारों के धारणी हुए थे जिन्होंने आगे चलकर बहुत अद्वितीय कार्य किए। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के सैद्धांतिक पक्ष ने इंकलाबी कार्य किए। उन्होंने खालसा पंथ की सृजना का आधार जनशक्ति को बनाया। उन्होंने सद्भावना, मानवकल्याणकारी, समन्वय एवं समानता के संकल्पों को अपने प्रत्येक कार्य में दृढ़तापूर्वक दर्शाया। लोक-रक्षा के लिए अपने रक्त से हस्ताक्षर किए।

मध्यकालीन दौर में हिंदोस्तान में घोर, भयंकर, लंबी और निरंतर हिमपात की कलरात्रि व्याप्त थी। इसने हिंदोस्तानी जनता को मूर्छित कर दिया। यह एक क्रूर दौर था। इस समय हिंदोस्तानी अपनी गौरवशाली परंपराओं को भुलाकर अपने संस्कार, अपनी भाषा, सभ्याचार भूल चुके थे। उन्हें जगाकर अपने अधिकारों के प्रति जागरूक करना श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का एक महान जन-उपकारी कार्य था।

तब भारतीय समाज जात-पात, ऊंच-नीच की दलदल में बुरी तरह से फंसा हुआ था। सत्ताधारियों को यह व्यवस्था पूरी तरह मन-भावन लग रही थी। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने इस व्यवस्था को पूरी तरह बदल दिया। उन्होंने सर्वसांझीवालता का संदेश दिया। ऊंच-नीच मिटाकर सबको एक समान बनाया। उनका यह पावन फरमान है :

कोऊ भइओ मुंडीआ संनिआसी कोई जोगी भइओ
कोऊ ब्रहमचारी कोऊ जती अनुमानबो ॥
हिंदू तुरक कोऊ राफजी इमाम साफी
मानस की जात सभै एकै पहिचानबो ॥
करता करीम सोई राजक रहीम ओई,
दूसरो न भेद कोई भूल भ्रम मानबो ॥
एक ही की सेव सभ ही को गुरदेव एक
एक ही सरूप सभै ऐकै जोत जानबो ॥
(अकाल उसतत)

यह बुनियादी परिवर्तन का सूचक है। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का विरोध किसी जाति, धर्म या संप्रदाय के साथ नहीं था बल्कि उनका विरोध जुल्म और ज़ालिम सत्ता के प्रति था।

इसलिए उन्होंने श्री गुरु नानक साहिब जी के सिद्धांत "ना हिंदू ना मुसलमान" के संकल्प और दलित एवं निम्न वर्ग को गले से लगाकर जुल्म का मुकाबला करने के लिए तैयार किया। इस प्रकार कर्मकांडियों के सिद्धांतों को भी पूरी तरह रद्द करके उन पर करारी चोट की।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने जाति का अभिमान करने वालों को भी झकझोरा। सिक्ख सिद्धांत अनुसार सब प्राणी बराबर है, कोई भी ऊंचा या नीचा नहीं है, गुरबाणी में बहिर्मुखी दृष्टि से बहुत ही दिलेरी के साथ जात-पात का खंडन किया गया है।

-जाति का गरबु न करीअहु कोई ॥
ब्रहमु बिंदे सो ब्राहमणु होई ॥१॥
जाति का गरबु न करि मूरख गवारा ॥
इसु गरब ते चलहि बहुतु विकारा ॥१॥
चारे वरन आखै सभु कोई ॥
ब्रहमु बिंद ते सभ ओपति होई ॥२॥
माटी एक सगल संसारा ॥
बहु बिधि भांडे घड़ै कुम्हारा ॥३॥
पंच ततु मिलि देही का आकारा ॥
घटि वधि को करै बीचारा ॥४॥
कहतु नानक इहु जीउ करम बंधु होई ॥
बिनु सतिगुर भेटे मुकति न होई ॥(पन्ना ११२७)

दशम पिता जी ने इन्हीं संकल्पों को विस्तार देते हुए हिंदोस्तानियों को गुलामी और जुल्म से छुटकारा पाजमने के लिए तैयार

किया। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी अद्भुत शक्तियों के स्वामी थे। जहां वे अस्त्र-शस्त्र विद्या में प्रवीण थे वहीं वे युद्ध नीतिक तरीकों से भी पूरी तरह वाकिफ़ थे। उन्होंने शब्द-शक्ति को भी एक हथियार की तरह प्रयुक्त किया। उन्हें ब्रज, हिंदी, फारसी, और पंजाबी भाषा का पूरा ज्ञान था। उनकी उत्तम रचनाएं इन भाषाओं में रची हुई है।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने सभ्याचारक, चेतना प्रदान करने के लिए सूचना की। उनका काव्य बहुत ही प्रेरणादायक है।

साध करम जे पुरख कमावै ॥
नाम देवता जगत कहावै ॥
कुक्रित करम जो जग मै करहीं ॥
नाम असुर तिन को सभ धरहीं ॥१५॥

(बचित्र नाटक)

सामाजिक चेतना प्रदान करने के लिए गुरु जी के दरबार में ५२ कवि उपस्थित थे।

इन बावन कवियों ने गुरु जी की आज्ञा अनुसर अनेक मतों की पुस्तकों का पंजाबी और हिंदी अनुवाद किया।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की विचारधारा बहुत ऊंचे दर्जे की थी। उनकी वैचारिक उच्चता की गवाही उनके द्वारा औरंगज़ेब बादशाह को फारसी में लिखी गई चिठ्ठी जिसको जफ़रनामा (जीत की चिट्ठी) कहा जाता है, भरती है। श्री अनंदपुर साहिब का किला रिक्त करते समय उनके बड़े साहिबज़ादे चमकौर की जंग में हुकूमती फौजों के साथ लोहा लेते हुए शहीद हो गए और छोटे साहिबज़ादों को सूबा सरहिंद ने माता गुजरी जी सहित पकड़ लिया। छोटे साहिबज़ादों को बहुत लालच, डरावे दिए गए कि वे अपना धर्म छोड़कर इस्लाम धर्म कबूल कर लें परंतु सात और नौ वर्षीय छोटी आयु के बाल साहिबज़ादों ने हार न मानी तो सूबा सरहिंद ने उन्हें जीवित ही नीवों में चिनवा दिया। इनकी कुर्बानी उपरांत माता गुजरी जी परलोक सिधार गए।

इस प्रकार श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का संपूर्ण परिवार बिछुड़कर कौम के लिए आहुति दे रहा था। ठीक उसी समय गुरु जी माछीवाड़े से उच्च के पीर बनकर मालवा क्षेत्र की तरफ प्रस्थान कर गए थे। दीनाकांगड़ स्थान से लिखा उनका ज़फरनामा भाई दइआ सिंघ और भाई धरम सिंघ के हाथ दक्षिण में मुगल सम्राट औरंगज़ेब की तरफ भेजा। इस पत्र की शब्दावली और तथ्य बहुत ही गूढ़ एवं आकर्षित करने वाले हैं। ऐतिहासिक स्रोतों से पता चलता है कि बादशाह औरंगज़ेब अपनी छोटी बेटी ज़ेबूनिसा से इस पत्र को सुनकर बहुत बेचैन हो गया था। यह श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की "चड़दी कला" वाली मनो अवस्था का प्रकटावा करता है। यह बात गौरतलब है कि महान गुरु जी के पिता उनकी नौ वर्षीय आयु में ही शहीद हो गए थे। माता और साहिबज़ादे चमकौर और सरहिंद में शहीद हो चुके थे। गुरु पत्नियां बिछुड़ चुकी थीं। ऐसी अवस्था में उन्होंने समय के हाकिमों को जिस दिलेरी के साथ चुनौती दी वह अपनी मिसाल आप है।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के दरबारी कवि भाई नंद लाल जी गोआ जो फारसी तथा अन्य भाषाओं के ज्ञाता थे, जिसने बाद में मुगल बादशाह बहादुर शाह के दरबार में भी नौकरी की। उसने गुरु जी को बहुत निकट से देखा और अपने भावों को 'गंजनामा' में ऐसे व्यक्त किया :

नासिरो मनसूर गुर गोबिंद सिंघ
ईज़दि मनजूर गुरू गोबिंद सिंघ ॥
हक्क रा गंजूर गुर गोबिंद सिंघ

जुमला फैजि नूर गुर गोबिंद सिंघ ॥
हक्क हक्क आगाह गुर गोबिंद सिंघ
शाहि शहनशाह गुर गोबिंद सिंघ ॥
बर दो आलम शाह गुर गोबिंद सिंघ
ख़सम रा जां-काह गुर गोबिंद सिंघ ॥ . . .
काशफुल असरार गुर गोबिंद सिंघ ॥
आलिमुल असतार गुर गोबिंद सिंघ
अबरि रहिमत बार गुर गोबिंद सिंघ ॥
मुकबुलो मकबूल गुर गोबिंद सिंघ
वासलो मौसुल गुर गोबिंद सिंघ ॥
जां-फिरोज़ि दहिर गुर गोबिंद सिंघ
फैज़ि हक्क रा बहिर गुर गोबिंद सिंघ ॥
हक्क रा महिबूब गुर गोबिंद सिंघ . . .
कादिरि हक कार गुर गोबिंद सिंघ
बेकसां-रा यार गुर गोबिंद सिंघ ॥ . . .
हक्क हक्क अंदेश गुर गोबिंद सिंघ
बादशाह दरवेश गुर गोबिंद सिंघ ॥

गुरु जी की अद्वितीय शख़्सियत को मुसलमान कवियों ने भी बयान किया। मिर्ज़ा अल्लहा यार खां योगी का यह कथन उनकी लोगों के हित में की गई कुर्बानी को सूक्ष्म स्तर पर प्रस्तुत करते हैं।

इनसाफ करे जी में ज़माना तो यकीं हैं।
कहि गुरू गोबिंद सिंघ का सानी ही नहीं है।
यह प्यार मुरीदों से यह शफ्क़त भी कहीं हैं?
भगती में गुरु अर्श है संसार जमी हैं।
करतार की सुगंध है, नानक की कसम है।
जितनी भी हो गोबिंद की तारीफ वुह कम है।

महान गुरु जी बादशाह और दरवेश थे जिन्होंने जुल्म के खिलाफ़ शमशीर उठाई। उन्होंने अपना सर्वस्व देश एवं कौम के लिए न्यौछावर कर दिया। वे तेग एवं कलम के धनी थे। वह बहुत बड़े नीति निपुण योद्धा, सूक्ष्मभाव संपन्न थे। उन्होंने दबे-कुचले लोगों को अपने हकों के प्रति सचेत किया तथा विशाल हकूमत से टक्कर ली।

गुरु जी के संकल्पों के अनुसार बाबा बंदा सिंघ बहादर ने बाद में पंजाब में किसानी की राजसत्ता स्थापित की। जिसके उपरांत पंजाब में महाराजा रणजीत सिंघ का विशाल और शक्तिशाली राज्य स्थापित हुआ। जिसको एक अलग और आज़ाद मुल्क के रूप में याद किया जाता है। गुरु जी की सांस्कृतिक योगदान को फारसी के विद्वानों के अतिरिक्त अंग्रेज इतिहासकारों और साहित्यकारों ने भी बहुत उच्च दर्जे पर रखकर पेश किया। जैसा कि कनिंघम का कथन है कि सिक्ख कौम के गुरु श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी चाहे अपने महान मंतव्यों की पूर्ति नहीं देख सके परंतु वे गिरे-हुए एवं सोए हुए लोगों को सफलता के साथ जागृत कर गए। उन्होंने लोगों के दिलों को सामाजिक उन्नति एवं कौमी आज़ादी के साथ भर दिया।

इस प्रकार ही जान कलॉर्क आरचर ने गुरु जी के विषय में लिखा है, गुरु जी बिना किसी सवाल उठने के उस समय तक हुए सिक्खों में से सबसे ज्यादा काबिल थे। यह बात लगभग यकीनी है कि उनके ज्योति-जोत समाने के समय तक वे सबसे अधिक विद्वान थे और निश्चय ही सब से उत्तम प्रबंधक।

इस प्रकार गुरु जी की हिंदोस्तान, समाज इतिहास और कौम को अद्वितीय देन है।

संदर्भ एवं टिप्पणी

1. भाई कान्ह सिंघ नाभा, गुरु शब्द रतनाकर, महान कोश,
2. दसम ग्रंथ
3. डॉ. गुरुदेव सिंघ पंधोहल, ज़फरनामा,
4. अल्लाह यार खां योगी शहीदानि वफा,
5. Cunnigham, History of the Sikhs
6. Johan Clark Archar, The Sikhs



गुर का सबदु रतंनु है . . .

-डॉ. मधु बाला*

गुरु का स्थान सर्वोपरि है, वह साधन है साध्य तक पहुंचने का। यदि हम पहली सीढ़ी ही नहीं चढ़ेंगे तो मंज़िल तक कैसे पहुंच सकते हैं? गुरु की महिमा का जो बखान गुरुओं, संतों, भक्तों, कवियों, ऋषियों-मुनियों एवं गुरु-पीरों-फकीरों द्वारा हुआ है वह हमसे छुपा हुआ नहीं है। गुरु उस पारस के समान है जो अपने स्पर्श से लोहे सदृश अधम शिष्य को भी खरा सोना बना देता है। ज्ञान का भंडार होने के कारण गुरु को उपदेश देने वाला अमूल्य ख़जाना माना जाता है। भक्त कबीर जी ने 'गुरु' और 'गोबिंद' (प्रभु) में से 'गुरु' को प्राथमिकता इसीलिए दी है क्योंकि यदि 'गुरु' नहीं होता तो 'गोबिंद' (प्रभु) के दर्शन असंभव होते।

गुरु गोबिंद दोऊ खड़े, काके लागू पाए।
बलिहारी गुरु आपणे जिन गोबिंद दियो बताए॥

'गुरु' को अंधकार का नाश करने वाला, ज्ञान का प्रकाशक एवं अपने (शिष्य) को सुरति रूपी शिला पर शिष्य रूपी कपड़े की मैल उतार कर उसे निर्मल, स्वच्छ और सुंदर बनाने वाला कहा जाता है। अनेक उदाहरणों द्वारा गुरु का स्थान निश्चित करने का प्रयास करने के बाद भी गुरु की महिमा का गायन कम नहीं हुआ। श्री गुरु अमरदास जी ने 'अनंदु' साहिब में गुरु के उपदेशों को रत्न-सदृश माना है। सलोक पच्चीस से चालीस तक गुरु महिमा का बखान करते हुए श्री गुरु अमरदास जी लिखते हैं कि गुरु का शबद उत्तम रत्न (हीरे-जवाहरात) के समान है। हमें अपना मन उसी में लगाना चाहिए। जिसका मन प्रभु-नाम रूपी रत्न में लगा है वह उसी में समा जाता है। जब मन शबद में लीन हो जाता है तभी परमात्मा से प्रेम होता है। वह परमात्मा स्वयं ही हीरा है, रत्न है, जो स्वयं ही जीवों को सद् ज्ञान देता है तथा स्वयं ही उस रत्न रूपी शबद में मन रमाने के लिए मन को प्रेरित करता है। वह (मनुष्य) सांसारिक बंधन तोड़कर मुक्त हो जाता है जिसने गुरु के शबद को मन में बसा लिया है। वह बंधन-मुक्त हो जाता है। गुरु को माध्यम बनाकर वह स्वयं जिस पर कृपा करता है वही उस परमात्मा से जुड़ जाता है, श्री गुरु नानक देव जी कहते हैं वह स्वयं कर्ता है (सृष्टि की रचना करने वाला है) और उसी के द्वारा उसके हुक्म से ही संपूर्ण सृष्टि संचालित होती है। स्मृतियों धर्म शास्त्रों में पुण्य और पाप का विचार तो है परंतु तत्व का सार तत्व की जानकारी किसी में नहीं है। गुरु के बिना तत्व का सार नहीं जाना जा सकता। तीन गुणों (सतो, रजो, तमो) में संसार भ्रमित है। अज्ञान की काली रात्रि में जीव सो रहा है। गुरु की कृपा से ही वे जन जागृत हुए हैं जिनके मन में परमात्मा के नाम का निवास है और वे (नित्यप्रति) अमृत बाणी का उच्चारण करते हैं। श्री गुरु नानक देव जी कहते हैं कि वही (मनुष्य) तत्व को प्राप्त कर सकता है जो दिन-रात प्रतिदिन प्रभु का ध्यान करता है और

*आई-१०९, गली नं: ५, मजीठीआ इन्कलेव, पटियाला-१४७००५, फोन +९१९९१४१-९०७२४

जागृत अवस्था में रहता है। आध्यात्मिक दृष्टि से सचेत, चेतन रहता है। माता के उदर में भी जीव का पालन-पोषण करने वाले परमात्मा को मन से विस्मृत नहीं करना चाहिए। क्योंकि उसका मन से विस्मरण हो जो गर्भस्थ अग्नि में भी जीव को आहार देता है। वह परमात्मा जिसको अपने प्रेम का पात्र बनाता है उसे कोई अन्य प्राप्त नहीं कर सकता है। स्वयं ही जीव की लग्न अपनी ओर लगाता है तथा गुरु के द्वारा उसे चिर-स्मरणीय बनाता है, गुरमुख में स्वयं समाता है। श्री गुरु नानक देव जी कहते हैं कि ऐसा महान दाता मन से क्यों भुलाया जाए? जैसी अग्नि उदर (गर्भ) की है वैसी ही (अग्नि रूपी) माया (की अग्नि) संसार को जलाने वाली है। माया और अग्नि एक समान है यही सृजनहार परमात्मा ने खेल रचाया है। जैसी उस प्रभु की इच्छा हुई वैसे ही परिवार में जीव का जन्म होता है और वह उस परिवार की खुशी का कारण बनता है। माया ने यह प्रमाणित कर दिया कि वह संसार को भ्रमित करने वाली है क्योंकि गर्भस्थ जीव परमात्मा से दुआ करता है कि मैं परमात्मा का ध्यान लगाऊंगा परंतु संसार में आते ही वह परमात्मा को भूलकर तृष्णाओं में फंस जाता है। यह माया ऐसी है कि इससे परमात्मा भूल जाता है, (संसार के प्रति) मोह जागृत हो जाता है और प्रभु को भुलाकर अन्य (पदार्थों/जीवों/संसार) से लग्न लग जाती है। श्री गुरु नानक देव जी कहते हैं कि जिसको गुरु की कृपा से परमात्मा के प्रति लग्न लग जाती है वे माया (संसार) में रहते हुए ही परमात्मा को प्राप्त कर लेते हैं। जैसे कि कीचड़ में ही कमल खिलता है, उसी प्रकार माया युक्त संसार में ही जीव परमात्मा रूपी कमल की प्राप्ति कर लेता है। परमात्मा स्वयं अमूल्य है, उसका मूल्य निश्चित नहीं किया जा सकता, असंख्य प्रयासों के बाद भी उसका मूल्य कोई नहीं जान सका। यदि कोई ऐसा सद्गुरु मिले कि जिसे स्वयं को समर्पित किया जा सके तभी जीव का 'आपा' (अहंकार) नष्ट हो जाता है। जीव स्वयं को जान लेता है, जीव के मन में परमात्मा का निवास है। श्री गुरु नानक देव जी कहते हैं कि वे भाग्यशाली हैं जिन्होंने परमात्मा को पा लिया है। जीव प्रतिदिन प्रभु-सिमरन का जाप करता है और प्रतिदिन लाभ उठाता है। यह परमात्मा रूपी धन उसे ही प्राप्त होता है जिसे स्वयं प्रभु अपनी इच्छा से प्रदान करते हैं। हे जिहवा! तू अन्य रसों के आस्वादन में लिप्त है (तथापि) तेरी प्यास नहीं मिटती। प्यास अन्य किसी रस से नहीं मिट सकती। केवल प्रभु-सिमरन में ही वो शक्ति है जो इस तृष्णा को मिटा सके। क्योंकि जब प्रभु-भक्ति का रस मिल जाता है तो अन्य कोई तृष्णा शेष नहीं रह जाती। यह प्रभु-रस सुकर्मों से प्राप्त होता है और जिसे सद्गुरु की प्राप्ति हो उसे प्राप्त होता है। श्री गुरु नानक देव जी कहते हैं कि अन्य सभी रस विस्मृत हो जाते हैं, पीछे छूट जाते हैं जब (जीव में) परमात्मा की लग्न पैदा हो जाती है। हे मेरे शरीर! प्रभु ने तुम्हारे अंदर अपनी ज्योति रखी तभी तुम इस संसार में आए। परमात्मा स्वयं ही माता है, स्वयं ही पिता है, जिसने तुम्हें जगत का दर्शन करवाया है। प्रभु ने अपनी ज्योति से सृष्टि को रचा है उसी ज्योति का अंश तुम्हारे अंदर भी रखा है, तभी जीव जगत में आया। प्रभु का (मन में) आगमन सुनकर मन का चाव बढ़ गया है। गुरु के चरणों का ध्यान करने से सौभाग्य उत्पन्न होता है और परमात्मा में (अपने प्रियतम की)

अनुभूति होने लगती है। गुरु के द्वारा अनहद बाणी का सुख मिलता है, प्रभु की प्राप्ति का रस प्राप्त होता है। श्री गुरु नानक देव जी कहते हैं कि वह करण-कारण (परमात्मा) गुरमुख व्यक्ति को स्वयं ही आकर मिलता है।

हे मेरे शरीर! तुमने इस जगत में आकर क्या कर्म किया? जब से तुम इस संसार में आए हो, जिस प्रभु ने तुम्हें रचा उसी प्रभु को तुमने मन में नहीं बसाया। उस प्रभु का नाम-सिमरन नहीं किया। श्री गुरु नानक देव जी कहते हैं कि यदि जीवात्मा ने गुरु में मन लगा लिया तो (मनुष्य) शरीर प्राप्त करना सफल हो जाएगा। हे मेरे नेत्रो! प्रभु ने तुम्हारे अंदर ज्योति रखी है, तुम उसके बिना और किसी को न देखो प्रभु की कृपा से तुम्हें दृष्टि प्राप्त हुई है। यह सारा विश्व उस प्रभु का ही रूप है। गुरु की कृपा से ही परमात्मा के एक रूप होने का ज्ञान मिला है, उसके बिना अन्य कोई नहीं है। श्री गुरु नानक देव जी कहते हैं कि ये नेत्र अंधे हैं जब सतिगुरु से मिलाप होता है, तभी इनको दिव्य दृष्टि प्राप्त होती है और ये उस प्रभु का दर्शन करने में समर्थ हो सकते हैं। हे मेरे कानों! तुम सत्य बाणी सुनने के लिए हो। सच्ची बाणी सुनने के लिए ही तुम्हें शरीर के साथ लगाया गया है, तुम प्रतिदिन सच्ची बाणी का श्रवण करो। जिसने उस बाणी को सुना है उसका तन-मन सुगंधित हो उठा है। उसकी रसना प्रभु में लीन हो गई है। अलख और सर्वशक्तिमान परमात्मा की गति विचित्र है। इसलिए श्री गुरु नानक देव जी कहते हैं कि तुम्हें सत्य बाणी श्रवण करने के लिए ही इस संसार में भेजा है। परमात्मा ने जीवात्मा को शरीर रूपी गुफा में रखकर पवन अर्थात् श्वासों के आवागमन का बाजा बजाया है, इसका (अनहद) नाद सुनने के लिए नौ द्वार प्रकट किए हैं और दसवां द्वार गुप्त रखा है। जो जीवात्मा गुरु की शरण लेती है, गुरु पर विश्वास रखती है उसका दसवां द्वार भी प्रकट हो जाता है। वहां परमात्मा निवास करता है। जिसका अंत नहीं पाया जा सकता। श्री गुरु नानक देव जी कहते हैं कि प्यारे परमात्मा ने जीव को शरीर रूपी गुफा में रखकर पवन रूपी बाजा बजाया है अर्थात् जीव में प्राण रूपी वायु का संचार किया है। उस सच्चे परमात्मा का सच्चा गान हृदय रूपी गृह में गाओ। जो जीव गुरु के माध्यम से परमात्मा को प्राप्त करते हैं वही प्रभु को भाते हैं। जिस जीव पर प्रभु की कृपा होती है वही उसे प्राप्त कर सकता है। श्री गुरु नानक देव जी कहते हैं कि अपने हृदय में परमात्मा का यशोगान (सिफत-सलाह) करो। हे सौभाग्यशालियों बाणी का श्रवण करो तुम्हारे सभी मनोरथ पूर्ण हो जाएंगे। प्रभु की प्राप्ति से सब-संताप दूर हो जाएंगे। सच्ची बाणी का श्रवण करने से दुख, रोग और संताप मिट जाएंगे। (तीन ताप हैं-- आध्यात्मिक, आधिदैविक, आधिभौतिक)। संपूर्ण गुरु के द्वारा परमात्मा को जानकर संत-सज्जन (खुशी से) विकसित होते हैं। सच्ची बाणी का उच्चारण करने वाले और सुनने वाले दोनों ही पवित्र हो जाते हैं। उन्हें प्रत्येक स्थान पर परमात्मा ही दिखाई देता है। श्री गुरु नानक देव जी विनती करते हैं कि जो जीव गुरु की शरण में जाता है उसे भरपूर आनंद की प्राप्ति होती है।

अनदु सुणहु वडभागीहो सगल मनोरथ पूरे ॥
पारब्रहमु प्रभु पाइआ उतरे सगल विसूरे ॥
दूख रोग संताप उतरे सुणी सची बाणी ॥
संत साजन भए सरसे पूरे गुर ते जाणी ॥
सुणते पुनीत कहते पवितु सतिगुरु रहिआ भरपूरे ॥

बिनवंति नानकु गुर चरण लागे वाजे अनहद तूरे ॥ *(पन्ना ९२२)*

इस प्रकार श्री गुरु ग्रंथ साहिब में गुरु की महिमा का गान किया है। गुरु का शबद हीरे एवं रत्न के समान है। गुरु के मार्गदर्शन के बिना जीव परमात्मा रूपी तत्व का सार जानने में असमर्थ रहता है। परमात्मा जीवन का दाता है, उसे किसी भी स्थिति में भूलना नहीं चाहिए गुरु एक ऐसा माध्यम है जो संसार-यात्रा करते-करते ही प्रभु का दर्शन करवा देता है, परमात्मा की पहचान गुरु से ही संभव है। जीव का संसार में आगमन परमात्मा की कृपा दृष्टि से होता है परंतु परमात्मा का दर्शन उसकी सत्ता का आभास गुरु कृपा से ही संभव होता है। हमारे शरीर का प्रत्येक अंग परमात्मा का चिंतन-मनन करने के लिए है। नेत्र-मात्र प्रभु दर्शन करने वाले ही सार्थक हैं। कान-मात्र प्रभु का यशोगान सुनने से ही सार्थक हैं। परमात्मा ने पंच प्राणों का शरीर में आधान किया है। गुरु की शरण ग्रहण करके जो जीवात्मा उस अनहद आनंद बाणी तक पहुंच जाता है तब उसके सभी मनोरथ पूर्ण हो जाते हैं। इसी लिए भक्त कबीर जी पावन फरमान करते हैं :

बलिहारी गुरु आपणे दिउहाड़ी सदवार।
जिनि माणस ते देवते कीए करत न लागी वार ॥ *(पन्ना ४६२)*

अर्थात् मैं अपने गुरु के बलिहारी जाता हूं दिन में सौ बार गुरु कृपा से अनुगृहीत होता हूं क्योंकि मेरे गुरु ने मुझे मनुष्य से देवता बनाने में पल भर का विलंभ भी नहीं किया। गुरु का स्थान इस कारण से भी महत्त्वपूर्ण है कि वह जीवात्मा और परमात्मा को मिलाने वाले सेतु है, माध्यम है, जिसके बिना परमात्मा को पाया ही नहीं जा सकता। गुरबाणी में गुरु का संकल्प अत्यंत गूढ़, गंभीर, सारगर्भित एवं मार्गदर्शक के रूप में वर्णित हुआ है :

बाणी गुरू गुरू है बाणी विचि बाणी अंम्रितु सारे ॥ *(पन्ना ९८२)*

इन शबदों में गुरु की अथाह महिमा समाई हुई है। इनको मन में आत्मसात करने के बाद मनुष्य जीवन में निश्चित ही अपना उद्देश्य पूर्ण करने में समर्थ होता है। 

शोध

गुरमति ज्ञान के अक्तूबर २०१५ अंक के पन्ना ८ पर प्रकाशित गुरबाणी की पंक्ति "गुरमुखि बांधिओ सेतु विधातै ॥ लंका लूटी दैत संतापै ॥" के अर्थों को निम्नलिखित समझा जाए :-

करतार ने (संसार समुद्र पर) गुरमुख-रूपी पुल बांध दिया (जैसे रामचंद्र जी ने सीता को वापिस लाने के लिए समुद्र पर पुल बांधा था)। (रामचंद्र जी ने) लंका को लूटा एवं राक्षसों को मारा, (उसी प्रकार गुरु ने कामादिक इंद्रियों के वश में पड़े शरीर को उनसे छुड़ा लिया और वह पांच दूत वश में हो गए)। रामचंद्र जी ने रावण को मारा, उसी प्रकार गुरमुख ने मन रूपी सांप को मार दिया; सतिगुरु का उपदेश (मन को मारने में इस तरह काम आया जैसे) विभीषण द्वारा भेद बताना (रावण को मारने में काम आया)। (रामचंद्र जी ने पुल बांधने के समय पत्थर समुद्र में तैरा दिए) सतिगुरु ने (संसार) समुद्र से (पत्थर-दिलों को) पार कर (तैरा) दिया, गुरु के द्वारा तैंतीस करोड़ (भावार्थ, बेअंत जीव) पार उत्तर गए हैं।

संपादक

प्रमुख सिक्ख संस्थाओं का उद्‌भव और विकास

*-डॉ जसविंदर कौर**

श्री गुरु नानक देव जी द्वारा संस्थापित तथा उनके नौ उत्तराधिकारी गुरु साहिबान द्वारा संचारित किये गये सिक्ख धर्म के विकास में सिक्ख संस्थाओं का महत्त्वपूर्ण योगदान है। सिक्ख संस्थाओं ने सिक्ख धर्म के मूल्यों को इंगित करते हुए उनको व्यवहारिक रूप में प्रस्तुत किया। इन संस्थाओं ने सिक्ख पंथ को एकता के सूत्र में बांधने में सहायता की। यही कारण है कि सिक्ख पंथ एकता के सूत्र में बंधकर एक संगठित समाज के रूप में स्थापित हो सका। संस्थाओं के कारण ही आरंभिक सिक्ख समाज अनुशासन में रहा तथा आगे चलकर यह अपना विलक्षण अस्तित्व स्थापित करने में सफल हुआ। संस्थाओं ने सिक्ख संस्कृति की सृजना में विशेष भूमिका निभाई। संस्थाओं के कारण ही सिक्ख धर्म एक संगठित समाज के रूप में विकसित हो सका, जबकि इसकी समकालीन कई और लहरें अपना अस्तित्व कायम रखने में असमर्थ रहीं। सिक्ख धर्म के स्वरूप और विकास को समझने के लिये गुरु, शबद, बाणी, संगत, पंगत, धर्मसाल, दान, दसवंध, अरदास, खालसा, अमृत, पांच प्यारे, खालसा पंथ, गुरमता आदि संस्थाओं के स्वरूप को समझना आवश्यक है। किंतु इनमें से प्रमुख संस्थाओं की चर्चा से पूर्व संस्था की अवधारणा के विषय में जानना आपेक्षित है।

वैबस्टर डिक्शनरी के अनुसार समाज या संस्कृति में **'संस्था'** एक महत्त्वपूर्ण परंपरा, संबंध या संगठन है। यह किसी वस्तु या व्यक्ति का किसी स्थान या वस्तु से संबंध होता है। चैंबरस टवंटीअथ सेंचुरी डिक्शनरी में कहा गया है कि संस्था वह है जो बनाई जाती है या स्थापित की जाती है, जो अवधारणा है, जो सिद्धांत है, जो नींव है, स्थापित नियम है, सिद्धांतों की व्यवस्था या नियम हैं। संस्था एक विचारधारा को ढांचा बनाती है। संस्था एक ऐसा संगठन है जिसका विशेष महत्त्व होता है, जिसकी पूर्ति के लिये पहले व्यक्तिगत और फिर सामूहिक रूप में प्रयत्न किये जाते हैं। इन कार्यों को आदत बनाया जाता है और फिर वे समय के साथ रूढ़ियों का रूप धारण कर लेती हैं जिन्हें तोड़ना अनुचित माना जाता है। इन रूढ़ियों की रक्षा के लिये एक ढांचा बनता है जिसके विशेष नियम होते हैं। इस प्रकार संस्था के निर्माण के लिये कई स्तर होते हैं, व्यवस्थायें और पद्धतियां होती हैं। संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि संस्था अपना पूर्ण व स्पष्ट रूप धारण करने से पहले कई पड़ावों में से होकर गुज़रती है। इसका निर्माण किसी एक व्यक्ति से नहीं बल्कि पीढ़ियों के योगदान से होता है।

निस्संदेह सिक्ख धर्म की संस्थायें भी कई पड़ावों मे से निकलीं परंतु इनके बीज हमें श्री गुरु नानक देव जी के काल में ही प्राप्त हो जाते हैं। श्री गुरु नानक देव जी ने प्रवृत्ति और निवृत्ति के मध्य एक संतुलित और आदर्श मार्ग को सबके समक्ष रखा जो मानव-कल्याण के सक्षम था। ऐसे धर्म की स्थापना के लिये कुछ संस्थायें वांछित थीं।

**प्रोफेसर, गुरु नानक अध्ययन विभाग, गुरु नानक देव यूनीवर्सिटी, श्री अमृतसर।*

गुरु-संस्था: गुरु को अज्ञान का अंधकार दूर कर ज्ञान का प्रकाश करने योग्य माना गया है। बाणी में गुरु को शीतलता प्रदान करने वाला, जहाज़, सीढ़ी आदि माना गया है। इसका भाव यह है कि वह हमारे उत्थान में सहायक होता है। वह हमें सत्य के मार्ग पर चलने और प्रभु को प्राप्त करने में सहायता करता है। श्री गुरु नानक देव जी का धनासरी राग में कथन है :

सो गुरु करउ जि साचु द्रिड़ावै ॥
अकथु कथावै सबदि मिलावै ॥ *(पन्ना ६८६)*

श्री गुरु रामदास जी गुरु और प्रभु में कोई भेद न मानते हुए फ़रमान करते हैं :

गुर गोविंदु गुोविंदु गुरू है नानक भेदु न भाई ॥
(पन्ना ४४२)

इसी अभिन्नता के कारण गुरु या सतिगुरु को प्रभु के पर्यायवाची के रूप में भी प्रयोग किया गया है :

हरि सिमरि एकंकारु साचा सभु जगतु जिंनि उपाइआ ॥ *(पन्ना ११९३)*

परंतु बहुत सारे प्रसंगों में परमात्मा और गुरु के मध्य के भेद के स्पष्ट संकेत भी प्राप्त होते हैं :

त्रिभवणु खोजि ढंढोलिआ गुरमुखि खोजि निहालि ॥
सतगुरि मेलि मिलाइआ नानक सो प्रभु नालि ॥
(पन्ना २०)

यहां प्रकाश की वस्तु (प्रभु) तथा बिचोले (सतिगुरु) में प्रत्यक्ष अंतर है। गुरबाणी में गुरु प्रभु-रूप है परंतु प्रभु नहीं। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने तो यहां तक कह दिया है :

जो हम को परमेसर उचरिहैं ॥
ते सभ नरक कुंड महि परिहैं ॥ (बचित्र नाटक)

सिक्ख मत में शबद-गुरु के सिद्धांत पर विशेष बल है। श्री गुरु नानक देव जी की 'सिध गोसटि' नामक पावन बाणी में सिद्धों ने श्री गुरु नानक देव जो को प्रश्न किया- *'तेरा कवणु गुरू जिस का तू चेला ॥'* तो इसके उत्तर में श्री गुरु नानक देव जी ने फरमाया- *'सबदु गुरू सुरति धुनि चेला ॥'* श्री गुरु नानक देव जी के अनुसार शबद प्रभु की श्रुति है। मनुष्य के ध्यान के लिये यही योग्य वस्तु है। शबद पर ध्यान केंद्रित करने से तथा अपने जीवन को दैवी इच्छा के अनुसार पूर्ण रूप से ढाल लेने पर ही मन को वश में किया जा सकता है, मनमुखता को बाहर निकाला जा सकता है और प्रभु से समीपता प्राप्त की जा सकती है, फिर अंत में उसकी समरूपता में पूर्ण हुआ जा सकता है। श्री गुरु नानक देव जी के अनुसार शबद-गुरु उपदेश है जो परमात्मा के सत्य का प्रकटावा है और मनुष्य को गुरु की ओर से दिया जाता है। 'गुरु' और 'शबद', शब्दों का एक साथ प्रयोग भी बाणी में हुआ है और गुरु-शबद से भाव गुरु की बाणी या शिक्षा है। गुरबाणी में बाणीकारों का आध्यात्मिक अनुभव शबद रूप में संकलित है। गुरमति के अनुसार बाणी गुरु साहिबान द्वारा प्रयत्न सहित रचित नहीं बल्कि उनके माध्यम से प्रभु-हुक्म ही प्रकट हुआ है। श्री गुरु नानक देव जी का कथन है :

हउ आपहु बोलि न जाणदा मै कहिआ सभु हुकमाउ जीउ ॥ *(पन्ना ७६३)*

इसी बात को और अधिक स्पष्ट करते हुए श्री गुरु रामदास जी का गउड़ी की वार में फरमान है :

सतिगुर की बाणी सति सति करि जाणहु गुरसिखहु हरि करता आपि मुहहु कढाए ॥
(पन्ना ३०८)

यही कारण है कि बाणी और शबद का सिक्ख मत में विशेष स्थान है और कहा गया है- *'बाणी गुरू गुरू है बाणी . . ॥'* गुरमति में शबद,

बाणी और गुरु में कोई अंतर नहीं माना गया। बाणी का पठन-पाठन गुरु का शबद सुनने के समान है। बाणी में परमात्मा को शबद रूप माना गया है और शबद को गुरु रूप। यहां गुरु आध्यात्मिक और अशरीरी गुरु है।

श्री गुरु नानक देव जी के उत्तराधिकारी गुरु साहिबान ने अपनी बाणी में गुरु-महिमा का उपरोक्त रूप कायम रखते हुए गुरु-महिमा उनके व्यक्तिगत रूप को लेकर भी गाई है और गुरु-शब्द का प्रयोग बाणी में सिक्ख गुरु साहिबान के लिये भी हुआ है। यहां गुरु अशरीरी से शरीरी हो गया है और अव्यक्तिगत से व्यक्तिगत। कुछ विद्वानों का मत है कि प्रथम गुरु जी की बाणी में गुरु के संस्थागत रूप का अभाव है और सिर्फ गुरु के सिद्धांतगत का ही चित्रण है जबकि दूसरे गुरु साहिबान ने गुरु की सिद्धांतगत व्यवस्था के साथ-साथ संस्थागत व्यवस्था को भी महत्ता दी परंतु इस विचारधारा को एक और दृष्टि से देखना होगा।

श्री गुरु नानक देव जी ने करतारपुर (अब पाकिस्तान) में धार्मिक केंद्र स्थापित किया। यहां अपने जीवन-काल में ही भाई लहिणा जी को गुरु थाप कर आपने जब श्री गुरु अंगद देव जी के आगे माथा टेका तो गुरगद्दी की परंपरा प्रचलित हो गई। यहीं करतारपुर में गुरु नानक साहिब ने गुरु को संस्थागत रूप प्रदान किया। इस संस्था का सबसे महत्त्वपूर्ण लक्षण यह है कि गुरगद्दी का दायित्व दुनियावी विधान के अनुसार नहीं बनता था बल्कि दैवी विधान के अनुसार बनता था। गुरु की तरफ से गुरु का पद उस योग्य अधिकारी को प्रदान किया जाता था, जिसमें गुरु बनने की योग्यताएं होती थीं।

इस तरह हम देखते हैं कि गुरु नानक साहिब की बाणी में जहां गुरु के संकल्प की चर्चा मिलती है या गुरु के मात्र सैद्धांतिक रूप का ही चित्रण प्राप्त होता है वहां श्री गुरु अंगद देव जी को गुरु स्थापित करने पर गुरु के संस्थागत रूप का भी आरंभ हो जाता है। सिक्ख मत में दस गुरु साहिबान में एक आध्यात्मिक संबंध देखने को मिलता है। समूह गुरु साहिबान की 'नानक' नाम से रचित बाणी 'दस गुरु एक ज्योति' के सिद्धांत की प्रोढ़ता करती है। सिक्ख मत में यह मान्यता है कि दस गुरु साहिबान शारीरिक रूप में चाहे भिन्न थे परंतु आध्यात्मिक तौर पर एक ही ज्योति, समूह गुरु साहिबान में विद्यमान थी। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में पावन फ़रमान है :

जोति ओहा जुगति साइ सहि काइआ फेरि पलटीऐ ॥ *(पन्ना ९६६)*

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने जो ज्योति अकाल पुरख से श्री गुरु नानक देव जी द्वारा प्राप्त की थी उसे पांच प्यारों के माध्यम से पंथ में प्रवेश करवा दिया। इस प्रकार पंथ गुरु का विशेष रूप हो गया। इसी प्रसंग में कहा गया है- '*खालसा मेरो रूप है खास ॥*' श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने 'बाणी' को 'गुरुता' प्रदान करके सिक्खी को ऐसा सदीवी गुरु प्रदान किया जिससे यह संकट किसी भी अवस्था में पैदा नहीं हो सकता था कि विचारधारा में व्यर्थ का परिवर्तन हो सकता है।

इस प्रकार सिक्ख मत में गुरु-संस्था का जो अंतिम रूप गुरु-ग्रंथ और गुरु-पंथ के रूप में प्रकट हुआ उसकी नींव रखने का श्रेय श्री गुरु नानक देव जी को जाता है, जिन्होंने पहले दैवी अनुभव पर आधारित सैद्धांतिक पक्ष के रूप में अपनी बाणी में गुरु की अवधारणा प्रदान की और फिर क्रियात्मक रूप में श्री गुरु अंगद देव जी को स्वयं गुरुता सौंपकर धर्म के विकास के

लिये गुरु-संस्था को अंकुरित किया। इसी के परिणामस्वरूप सिक्ख पंथ में गुरु-संस्था उभर कर सामने आई, जिसने सिक्ख पंथ को संगठित करने में अहम भूमिका निभाई।

संगत-संस्था : सिक्ख मत के अनुसार संगत-संस्था उन व्यक्तियों का समूह है जो श्री गुरु ग्रंथ साहिब के समक्ष किसी उद्देश्य से एकत्र हुए हों। ऐसा समूह कीर्तन करता है, बाणी पर विचार-चर्चा करता है, धार्मिक क्रियाएं करता है और सामाजिक एवं राजनैतिक पक्षों से संबंधित विषयों पर चर्चा करता है। इसमें विभिन्न जातियों, व्यवसायों के व्यक्ति शामिल होते हैं।

संगत संस्था के इतिहास पर दृष्टि डालें तो पता चलता है कि इसका आरंभ श्री गुरु नानक देव जी के समय से ही हो गया था। श्री गुरु नानक देव जी की चार उदासियों (प्रचार-यात्राएं) के समय ही बहुत सारे लोग उनकी विचारधारा से प्रभावित होकर उनके अनुयाई बन गये जो संगत के रूप में एकत्र होकर बाणी का उच्चारण करते थे। श्री गुरु नानक देव जी द्वारा स्थापित धार्मिक केंद्र करतारपुर में भी संगतें गुरु जी के प्रवचनों से लाभान्वित होती थीं। भाई गुरदास जी ने वारों में करतारपुर के संबंध में चर्चा करते हुए कहा है :

धरमसाल करतार पुरु साधसंगति सच खंडु वसाइआ। *(वार २४:१)*

करतारपुर में रहने वाली संगत गुरु जी के उपदेशों के अनुसार अपना जीवन-यापन करती थी। करतारपुर में संगतें रसोई, सफाई, बरतन साफ करने, आये श्रद्धालुओं की सेवा करती थीं, जो क्रम बाद में भी चालू रहा। करतारपुर के अतिरिक्त और स्थानों पर भी संगतों का निर्माण हो चुका था। यह संगत नाम के जाप के साथ लंगर आदि को भी विशेष महत्त्व देती थीं। श्री गुरु अंगद देव जी ने एक नया केंद्र खडूर साहिब स्थापित किया। श्री गुरु अमरदास जी ने संगतों को गुरु के साथ जोड़ने के लिये मंजी-प्रथा का आरंभ किया और इनका कार्य श्रद्धालु सिक्खों को सौंपा जिनका कार्य गुरबाणी की व्याख्या करना तथा संगत को गुरु साहिब से मिलवाना था। वैसाखी के दिन समूह संगतें गुरु जी के दर्शन हेतु आती थीं और उन्हें भेंट प्रदान करती थीं।

श्री गुरु रामदास जी ने 'संगत-संस्था' को सुव्यवस्थित करने के लिये 'मसंद-संस्था' का आरंभ किया तथा आदेश दिया कि प्रत्येक सिक्ख अपनी मेहनत से की गई कमाई में से दसवां भाग (दसवंध) निकाल कर, धार्मिक और सामाजिक कार्यों के लिये अपने क्षेत्र के मसंद को दे। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के समय तक डल्ला, सुलतानपुर, लाहौर, काबुल, कश्मीर, थानेश्वर, दिल्ली, फ़तहिपुर, आगरा, ढाका, ग्वालियर, जौनपुर, पटना, राजमहिल आदि तक सिक्खी के प्रचारक केंद्र स्थापित हो चुके थे।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने १६९९ ई में खालसे की सृजना करके सिक्ख धर्म की आरंभ से चली आ रही 'संगत-प्रथा' को किसी भेदभाव रहित सामूहिक भाईचारे की विशेषता वाले खालसा पंथ में परिणित कर दिया। पांच प्यारों का खालसा सृजना में अहम योगदान है, जिनके चुनाव में किसी वर्ग, जाति, क्षेत्र आदि को प्रधानता नहीं दी गई। पांच प्यारों को अमृत-पान करवा कर फिर श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने उनसे अमृत-पान किया तथा संगत या खालसे को गुरु की पदवी प्रदान करते हुए फरमाया :

खालसा मेरो रूप है खास ॥
खालसे मै हउ करउ निवास ॥
(श्री सरबलोह ग्रंथ, पन्ना ६६७)

लंगर-संस्था : सिक्ख धर्म के सिद्धांतों को व्यवहारिक रूप प्रदान करने तथा इसे संगठित बनाये रखने में लंगर या पंगत संस्था का अहम योगदान है। सिक्ख स्रोतों के अनुसार श्री गुरु नानक देव जी के समय ही लंगर-संस्था का आरंभ हो गया था। श्री गुरु नानक देव जी द्वारा स्थापित धार्मिक केंद्र करतारपुर में भी संगतें सामूहिक रूप में लंगर ग्रहण करती थीं। श्री गुरु अंगद देव जी ने खडूर साहिब में इस संस्था को और प्रफुल्लित किया। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में भी इस बात के संकेत मिलते हैं कि श्री गुरु अंगद देव जी के समय लंगर की सेवा उनके महिल (सुपत्नी) माता खीवी जी की देख-रेख में होती थी। श्री गुरु अमरदास जी के समय में लंगर सिक्ख धर्म की एक महत्त्वपूर्ण संस्था बन गया। उन्होंने *'पहले पंगत पाछै संगत'* का नियम स्थापित किया। सिक्ख परंपरा के अनुसार सम्राट अकबर ने भी गुरु-घर में लंगर ग्रहण किया था। मंजीदारों ने अपने-अपने क्षेत्रों में धर्मसालें स्थापित कीं जहां लंगर की व्यवस्था भी होती थी। श्री गुरु रामदास जी के समय लंगर-संस्था के साथ आध्यात्मिकता की भावना भी जुड़ गई।

श्री गुरु अरजन देव जी के समय सिक्ख पंथ का प्रसार सम्पूर्ण भारत में हो चुका था। उन्होंने दसवंध की परंपरा चलाई। इस दसवंध से धर्मसालाओं में लंगर चलाए जाते थे। श्री गुरु अरजन देव जी के समय लंगर की सेवा को दैवी-सेवा के तुल्य समझा जाता था। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के सिक्ख भी लंगर के प्रति सेवाओं को पूर्णत: समर्पित थे। गुरु साहिब ने नानकमते को योगियों से स्वतंत्र कराकर बाबा अलमस्त को लंगर की सेवा की जिम्मेवारी सौंपी। सिक्ख इतिहास के स्रोतों में यह जानकारी भी मिलती है कि भाई गड़िए, भाई रूपचंद को लंगर की सेवा तन, मन, धन से करने के लिए गुरु जी ने उन्हें सराहा। बीबी वीरो की शादी के लिये तैयार किये मिष्ठान काबुल की संगत में वितरण कर देना श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के लंगर के प्रति प्रेम को प्रकट करता है।

श्री गुरु हरिराय साहिब जी ने लंगर चलाने को सबसे अधिक कल्याणकारी माना। श्री सरूप दास भल्ला के अनुसार, 'उनके समय में सिक्ख संगत ने नगर-नगर में लंगर स्थापित कर दिये जिससे गुरु-महिमा के प्रसार में वृद्धि हुई। श्री गुरु तेग बहादर जी के समय में भाई गड़िया जी की निगरानी में बाबा बकाला में लंगर की सेवा की जाती थी। पंजाब ही नहीं पूर्वी भारत में भी लंगर के लिये संगत में बहुत उत्साह था। पटना निवासी भाई जैता सेठ जी लंगर की सेवा के लिये समर्पित थे। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के समय संगत के लिये श्री अनंदपुर साहिब में एक से अधिक लंगर चलाए जाते थे। लंगर की व्यवस्था में गुरु जी स्वयं रुचि लेते थे। खालसे की सृजना के उपरांत भी लंगर संस्था निर्विघ्न खालसे की रहित सर्यादा का अंग बनी रही। माता सुंदरी जी और माता साहिब कौर जी के हुक्मनामों में भी सिक्खों को लंगर के लिये भेंट के आदेश प्राप्त होते हैं जो इस संस्था को चलाए रखने की रुचि के प्रमाण हैं। १८वीं सदी के रहितनामे *'गरीब का मुंह, गुरु की गोलक'* कहते हैं। रहितनामा साहित्य में लंगर के लिये खाना तैयार करते समय सफाई और पवित्रता का ध्यान रखना चाहिए। लंगर की सेवा प्रेम-भाव से की जानी चाहिये, ऐसे संदर्भ भी सिक्ख साहित्य में प्राप्त होते हैं। इस प्रकार यह पता चलता है कि लंगर-संस्था चाहे संगत की आवश्यकता की पूर्ति भी करती थी परंतु इसकी स्थापना के काल से ही इसका संस्थागत रूप भी कायम हो गया था। यह संस्था शीघ्र ही सिक्ख

धर्म का अभिन्न अंग बन गयी। इस संस्था ने जात-पात एवं ऊंचे-नीचे वर्ग के भेदभाव को मिटाने में बहुत अहम भूमिका निभाई। बिना भेदभाव के सब लोग एक साथ बैठकर लंगर ग्रहण करते थे, एक ही रसोई का बना भोजन लेते थे जिसने भ्रातृत्व-भावना को बनाने में सहायता की।

धर्मसाल : 'धर्मसाल' शब्द के कोशगत अर्थ हैं वह स्थान जहां धर्म की क्रिया हो या धर्म कमाने का स्थान। यह वह स्थान है जहां यात्रियों को निःशुल्क निवास दिया जाता है। वहां अतिथियों को निवास तथा अन्न और विद्यार्थियों को धार्मिक पोथियों द्वारा धार्मिक शिक्षा भी दी जाती है। यहां धर्म-अधर्म पर विचार-चर्चा, नाम-जाप, कीर्तन आदि भी किये जाते हैं। धर्मसाल में सेवा-भावना से कार्य होता है, इसकी चर्चा श्री गुरु ग्रंथ साहिब में भी है। गुरु साहिब ने इस संदर्भ में कहा है :

मै बधी सचु धरम साल है ॥
गुरसिखा लहदा भालि कै ॥
पैर धोवा पखा फेरदा तिसु निवि निवि लगा पाइ जीउ ॥ *(पन्ना ७३)*

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में यह भी चर्चा है कि धर्मसाल में धर्मी पुरुषों के साथ मिलकर, अमृत-नाम का खज़ाना प्राप्त करके, प्रभु के यश का गायन तथा श्रवण किया जाता है :

हउ मागउ तुझै दइआल करि दासा गोलिआ ॥
नउ निधि पाई राजु जीवा बोलिआ ॥
अंम्रित नामु निधानु दासा घरि घणा ॥
तिन कै संगि निहालु स्रवणी जसु सुणा ॥
कमावा तिन की कार सरीरु पवितु होइ ॥
पखा पाणी पीसि बिगसा पैर धोइ ॥
आपहु कछू न होइ प्रभ नदरि निहालीऐ ॥
मोहि निरगुण दिचै थाउ संत धरम सालीऐ ॥
(पन्ना ५१८)

भाई गुरदास जी अपनी वारों में 'धर्मसाल' को 'मानसरोवर' कहते हैं जहां से गुरु-शबद रत्न प्राप्त होते हैं :

धरमसाल है मानसरु हंस गुरसिख वाहु।
रतन पदारथ गुर सबदु करि कीरतनु खाहु ॥
(वार ९:१४)

भाई गुरदास जी की वारों में चर्चा है कि जहां-जहां भी गुरु साहिबान गये वहीं सिक्ख संगतें स्थापित हुईं, वहीं-वहीं धर्मसाल स्थापित होती गईं। वे स्थान पूज्य बन गये। धर्मसाल का मुखिया संगत का मुखी होता था।

श्री गुरु नानक देव जी ने अपने जीवन काल में ही करतारपुर में धर्मसाल की स्थापना की जहां संगत एकत्र होकर आध्यात्मिक वातावरण की सृजना करती थी। गुरु साहिब यहां संगत को उपदेश देते थे तथा आई संगत को लंगर और आवश्यक सुविधायें प्राप्त होती थीं। खडूर साहिब, गोइंदवाल साहिब तथा श्री अमृतसर में भी गुरु साहिबान ने धर्मसालाओं की स्थापना की। यहां सिक्खों द्वारा अतिथियों की सेवा, यात्रियों के लिये विश्रामस्थल, आध्यात्मिक जिज्ञासुओं के लिये गुरमति-विद्या, नाम-साधना, बाणी के पाठ आदि की सुविधाएं उपलब्ध होती थीं। सिक्ख, गुरु साहिब के गुरुपर्व आदि भी यहीं मनाते थे। भाई गुरदास जी धर्मसाल की महत्ता को स्वीकारते हुए सहजपुरी और सर्वोत्तम कहते हैं :

सते पुरीआ सोधीआ सहज पुरी सची धरमसाला।
(वार २९:८)

निर्मल गुरमति सिद्धांतों के अनुरूप धर्मसालाओं को आज गुरुद्वारा साहिब के नाम से जाना जाता है जिसको आध्यात्मिकता के विकास का स्थान ही बनाये रखने हेतु सभी संभव प्रयास करने चाहिए।



नोट : इस निबंध लड़ी को सितंबर एवं नवंबर अंक के मध्य में पढ़ने का कृतार्थ कीजिए।

गुरबाणी चिंतनधारा : +९४

सुखमनी साहिब : विचार व्याख्या

*-डॉ मनजीत कौर**

आपि सति कीआ सभु सति ॥
तिसु प्रभ ते सगली उतपति ॥
तिसु भावै ता करे बिसथारु ॥
तिसु भावै ता एकंकारु ॥
अनिक कला लखी नह जाइ ॥
जिसु भावै तिसु लए मिलाइ ॥
कवन निकटि कवन कहीऐ दूरि ॥
आपे आपि आप भरपूरि ॥
अंतरगति जिसु आपि जनाए ॥
नानक तिसु जन आपि बुझाए ॥५॥

२३वीं असटपदी की पांचवी पउड़ी में गुरु पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी अकाल पुरख की रचना को भ्रम, भुलेखों से रहित पूर्ण अस्तित्व वाली मानते हुए, उसकी रचना के विस्तार करने एवं उसे समेटकर पुन: एक हो जाने की मौज का भी ज़िक्र करते हुए जीव को यही समझा रहे हैं कि सब कुछ उसकी रज़ा (हुक्म) में ही मुमकिन है तथा उसकी सर्वव्यापकता का बोध भी वो मालिक जिसे चाहे उसे ही करवाता है।

गुरु पातशाह पावन फरमान करते हैं कि वह परमेश्वर आप सत्य स्वरूप है और उसकी रचना भी सात्विक है अर्थात् वह प्रभु अस्तित्व वाला है और उसकी रचना भी अस्तित्व वाली है क्योंकि सारी रचना उसी के द्वारा सृजित है (रची गई है), उसकी जब मौज होती है अर्थात् जब उसे भाता है तब वह ईश्वर रचना का अनंत प्रसार कर देता है और जब चाहे तो रचना को संकोच देता है अर्थात् अनेक फिर एक हो जाता है। उसकी अनंत ताकतें हैं जो अनंत है, उसका अंत पाना ना मुमकिन है अर्थात् उसकी शक्तियां अवर्णनीय हैं।

जिस पर उस मालिक की रहमत (कृपा दृष्टि) होती है उसे अपने में एकाकार कर लेता है अर्थात् उसे अपने में मिला लेता है। वह प्रभु किसके नज़दीक है, किससे दूर है यह तथ्य कैसे बयान किया जा सकता है? वह परमेश्वर स्वयं ही कण-कण में (सर्वत्र) समाया हुआ है। गुरु पातशाह पावन फरमान करते हैं कि जिसे वह प्रभु आंतरिक सूझ (ज्ञान) बख़्शता है उसे ही अपने वास्तविक स्वरूप की समझ बख़्शता है।

वस्तुत: गुरबाणी में उस सच्चे परमेश्वर की रचना को सत्य स्वरूप माना गया है गुरबाणी में अन्यत्र यही भाव दृढ़ करवाया गया है :

इहु जगु सचै की है कोठड़ी सचे का विचि वासु ॥ *(पन्ना ४६३)*

वैसे गुरबाणी में जगत रचना को झूठ भी माना है जैसा कि श्री गुरु तेग बहादर जी की पावन बाणी इस संदर्भ में उल्लेखनीय हैं :

जग रचना सभ झूठ है जानि लेहु रे मीत ॥
कहि नानक थिरु ना रहै जिउ बालू की भीति ॥
(पन्ना १४२९)

यहां उपरोक्त दोनों बाणी के स्वरूप जिसमें जगत को सच्चा और फिर इस रचना

**२/१०४, जवाहर नगर, जयपुर-३०२००४, फोन : +९१९९२९७-६२५२३*

को झूठा माना गया है। वास्तव में इस गूढ़ रहस्य को समझने के लिए हमें ध्यान से दोनों पंक्तियों को पढ़कर विचारने की ज़रूरत है, पहली पंक्ति में समझाया गया है कि यह रचना उस परमेश्वर की रची हुई कोठरी है और इसमें उस सच्चे मालिक का निवास है। असल में जिसने इस रहस्य को समझ लिया कि जिस हृदय घर में ईश्वर का वास है वह स्थान, वह रचना झूठी कैसे हो सकती है? और दूसरी पंक्ति में यह तथ्य समझाया गया है कि अगर यह अमूल्य जीवन पाकर भी उस परमेश्वर का नाम न जपा तो असल मकसद के बिना यह जीवन (रचना) बालू की रेत के समान है जिसे विनिष्ट होते देर नहीं लगती। इस संसार में मनुष्य जीवन पाने के बिना उस ईश्वर को नहीं पाया जा सकता; इस तथ्य और रहस्य को जिन्होंने गुरु कृपा से समझ लिया वे अपने जीवन मरोरथ में सफल हो गए। क्योंकि उन्होंने कण-कण में उस सच्चे प्रभु का दीदार करते हुए अपना मानव जीवन सफल कर लिया और इसके विपरीत जिन्होंने संसार के पदार्थों को ही सच मानकर उसी में गलतान हो गए और उस सच्चे परमेश्वर को हृदय से भुला दिया उनके लिए यह जग रचना झूठी ही साबित हुई और वे जीवन रूपी बाज़ी हार गए।

इस जगत रचना के विचित्र खेल की समझ जिसे वह मालिक आप ही बख़्शता है वहीं जीवन रूपी बाज़ी जीतकर जाते हैं और उस मालिक की दरगाह में प्रवान हो जाते हैं।

सरब भूत आपि वरतारा ॥
सरब नैन आपि पेखनहारा ॥
सगल समग्री जा का तना ॥
आपन जसु आप ही सुना ॥
आवन जानु इकु खेलु बनाइआ ॥
आगिआकारी कीनी माइआ ॥
सभ कै मधि अलिपतो रहै ॥
जो किछु कहणा सु आपे कहै ॥
आगिआ आवै आगिआ जाइ ॥
नानक जा भावै ता लए समाइ ॥६॥

२३वीं असटपदी की छठी पउड़ी में गुरु पंचम पातशाह जी ने अकाल पुरख की सर्व व्यापकता, उसकी जगत रचना तथा माया का प्रसार, जीवों की उत्पति एवं ईश्वर में लीन होना सब कुछ उस मालिक के हुक्म के अधीन बताया है।

गुरु पातशाह पावन फरमान करते हैं कि समस्त जीवों में परमेश्वर आप ही समाया हुआ है अर्थात् विद्यमान है; समस्त जीवों के नेत्रों (आंखों) में से प्रभु आप ही देख रहा है। संसार के सकल (सारे) पदार्थ अर्थात् सारी रचना उसके शरीर के समान है। अत: वह संपूर्ण सृष्टि में समाया हुआ है। वह प्रभु अपना यशोगान (सिफत-सलाह) आप ही सुन रहा। उसने (जीवों के) आवागमन का खेल रचा रखा है। उसके द्वारा ही माया सृजित हुई अर्थात् माया की रचना उस प्रभु ने ही की है। लेकिन यह उसी द्वारा रची हुई माया भी उसी परमेश्वर के हुक्म में है। वह परमेश्वर इस जगत रचना के बीच सबमें होते हुए भी सबसे निर्लेप है जो कुछ कहता है वह स्वयं ही करता है। जीव उस प्रभु की आज्ञा में ही इस जगत रचना में आता और चला जाता है। अंतिम पंक्ति में गुरु पंचम पातशह पावन फ़रमान करते हैं कि वह परमेश्वर जब चाहे (अपनी रची हुई) रचना को अपने में ही लीन कर लेता है।

वस्तुत: वही परमेश्वर सारी सृष्टि में

समाया हुआ है। अपनी ही मौज में वह रचना रचता है और जब वह चाहता है इसे स्वयं में लीन कर देता है। लेकिन वह प्रभु निर्गुण होते हुए भी सगुण रूप में सब में रचा बसा हुआ है। माया की रचना भी उसी ने की है लेकिन उसे अपने वश में रखा हुआ है। उसने ही आवागमन का खेल रचा रखा है जिसे चाहे जब चाहे जीव को माया में गलतान कर देता है और आवागमन के चक्करों में डाल देता है और जिसे चाहे आवागमन से मुक्त कर उसे अपने चरणों में लीन कर देता है।

विशेष तथ्य कि सारी रचना ही उस परमेश्वर का शरीर है। गुरबाणी में अनेक उदाहरणों द्वारा इस तथ्य की पुष्टि हुई है जैसा कि श्री गुरु नानक पातशाह जी का पावन फरमान है :

जेता सबदु सुरति धुनि तेती जेता रूपु काइआ तेरी ॥ *(पन्ना ३५०)*

अर्थात् हे प्रभु! जितने शब्द हैं उनकी ध्वनि को सुनने वाली सुरति भी उतनी ही है। सृष्टि के जितने भी आकार हैं वह परमेश्वर के ही शरीर हैं।

तीसरे पातशाह श्री गुरु अमरदास जी की पावन बाणी 'अनंद साहिब' में भी इसी भाव के दर्शन होते हैं यथा :

एहु विसु संसारु तुम देखदे एहु हरि का रूपु है हरि रूपु नदरी आइआ ॥
गुर परसादी बुझिआ जा वेखा हरि इकु है हरि बिनु अवरु न कोई ॥ *(पन्ना ९२२)*

अर्थात् इस परिवर्तनशील संसार में जो कुछ भी तुम देख रहे हो वह परमात्मा का ही रूप है और वह प्रभु रूप में ही दिखाई दे रहा है। गुरु-कृपा से यह सूझ पैदा हुई कि परमात्मा के बिना और कोई नहीं है।

इस प्रकार उस परमेश्वर की आश्चर्यजनक लीलाएं हैं। वह सबमें समाया हुआ भी सबसे निर्लेप है, माया उसकी रचना है परंतु उस पर हावी नहीं है, उसकी दासी है वह निरंजन अर्थात् माया के प्रभाव से रहित है उसके हुक्म में ही आवागमन के चक्कर है उसी के हुक्म में ही जीव जगत में आ रहे हैं और फिर उसी के हुक्म में ही उस में लीन हो जाते हैं। संक्षेप में बस यही कहा जा सकता है कि वह प्रभु बेअंत, उसकी रचना अनंत उसके कौतुक अपरंपार है। *"तू बेअंत कोई विरला जानै ॥"* वह बेअंत है यह सूझ भी वाहिगुरु किसी विरले को ही बख़्शता है।

इस ते होइ सु नाही बुरा ॥
ओरै कहहु किनै कछु करा ॥
आपि भला करतूति अति नीकी ॥
आपे जानै अपने जी की ॥
आपि साचु धारी सभ साचु ॥
ओति पोति आपन संगि राचु ॥
ता की गति मिति कही न जाइ ॥
दूसर होइ त सोझी पाइ ॥
तिस का कीआ सभु परवानु ॥
गुर प्रसादि नानक इहु जानु ॥७॥

पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी ने सातवीं पउड़ी में कलयुगी जीवों को यह तथ्य दृढ़ करवाया है कि वह परमात्मा जीवों के लिए जो कुछ भी करता है अच्छा ही करता है। वह अंतर्यामी है वह आप भला है और उसकी संपूर्ण करनी (कर्म) भी भली है। वह सारी रचना में समाया हुआ है और उसका हुक्म जीवों को मानना ही पड़ता है इसके सिवाय कोई चारा नहीं यह समझ गुरु द्वारा मुमकिन है।

गुरु पातशाह पावन फ़रमान करते हैं कि जो कुछ भी परमेश्वर की ओर (तरफ) से होता

है वह जीवों के लिए बुरा (अहितकर) नहीं होता अर्थात् भला ही होता है। और बताओ ईश्वर के बिना किसी ने कुछ कर दिखाया है? वह स्वयं भला (नेक) है तथा उसकी करनी भी भली है। अपने दिल की बातें वह आप ही जानता है अर्थात् अपनी रज़ा का वह आप ही ज्ञाता है। वह स्वयं सत्य स्वरूप तथा उसकी सृजना (रचना) भी सत्य है। वह ताने-पेटे की तरह स्वयं रचना में पिरोया हुआ है। उसकी गति बयान से परे हैं अर्थात् वह कैसा है; कितना बड़ा है यह भेद कथन से परे हैं अर्थात् इस रहस्य को कोई प्रकट नहीं कर सकता है। उस जैसा कोई दूसरा होता तो इस रहस्य को समझ पाने में सफल होता अर्थात् उस जैसा कोई और नहीं है, इसलिए कोई इस भेद को समझ नहीं सकता। इसलिए उस मालिक का किया सबको प्रवान करना ही पड़ता है। गुरु पातशाह इस पउड़ी की अंतिम पंक्ति में पावन फरमान करते हैं कि यह रहस्य गुरु कृपा द्वारा ही समझा जा सकता है।

उपरोक्त पउड़ी में गुरु साहिब ने यही समझाया है कि उस परमेश्वर का किया कोई भी कार्य बुरा नहीं होता। इस संसार में अनेक विचित्र घटनाएं घटती हैं जो मनुष्य की सोच से परे होती हैं, जिन्हें मनुष्य गलत समझता है तथा मानता भी है लेकिन मात्र अपनी नादानी से। जब गुरु-कृपा से उसे समझ में आ जाती है कि ईश्वर तो दया, करूणा, प्रेम का अथाह भंडार है। वह जो कुछ भी करता है जीव के भले के लिए ही करता है। जब तक जीव की बुद्धि अविकसित है तब तक वह गहरे रहस्य को समझाने में असमर्थ रहेगा लेकिन जब उसकी बुद्धि विकसित हो जाती है तो वह इन रहस्यों को समझने लगता है कि किस प्रकार जो कुछ भी हो रहा है प्रभु-परमेश्वर की रज़ा में हो रहा है और उसी में परमेश्वर की रहमतें बसी हैं।

जो जानै तिसु सदा सुखु होइ ॥
आपि मिलाइ लए प्रभु सोइ ॥
ओहु धनवंतु कुलवंतु पतिवंतु ॥
जीवन मुकति जिसु रिदै भगवंतु ॥
धंनु धंनु धंनु जनु आइआ ॥
जिसु प्रसादि सभु जगतु तराइआ ॥
जन आवन का इहै सुआउ ॥
जन कै संगि चिति आवै नाउ ॥
आपि मुकतु मुकतु करै संसारु ॥
नानक तिसु जन कउ सदा नमसकारु ॥८॥२३॥
(पन्ना २९५)

२३वीं असटपदी की अंतिम पउड़ी में गुरु पातशाह जी ने इस तथ्य को उजागर किया है कि जो सत्य को समझ लेता है वहीं स्थायी सुख प्राप्त करने में सफल होता है। वही कुलीन एवं असल में धनी है, जिसके हृदय घर में प्रभु का निवास हो गया है वह जीते-जी मुक्तावस्था को प्राप्त कर लेता है, उसके साथ-साथ संसार का भी उद्धार हो जाता है।

श्री गुरु पंचम पातशाह पावन फ़रमान करते हैं कि जो मनुष्य सत्य स्वरूप प्रभु को जान लेता है वह सदैव सुखी रहता है। परमेश्वर उसे स्वयं ही अपने साथ मिला लेता है। जिसके हृदय में प्रभु का निवास हो गया वही वास्तव में धनवान है, वहीं ऊंचे कुल का है और वही शोभा वाला है अर्थात् वही सच्चा धनी, कुलीन तथा सच्ची और सदा कायम रहने वाली शोभा वाला है। उसे जीते-जी मुक्ति की प्राप्ति हो जाती है। उस मनुष्य का इस जगत में आना धन्य (मुबारक) है। जिसकी मेहर से (कृपा) से संसार का उद्धार होता है।

ईश्वर के भक्त का इस संसार में आने का यही उद्देश्य (प्रयोजन) है कि उसकी संगत द्वारा लोगों के हृदय में प्रभु-नाम का निवास हो। प्रभु के भक्त को सदा नमस्कार है, प्रणाम है। गुरु पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी अंतिम पंक्ति में ऐसे जगत उद्धारकों को बारंबार प्रणाम करते है जो खुद तो मुक्त है तथा संसार को भी मुक्त करता है।

वस्तुत: इस संसार के जीव बहुतायत मात्रा में अपनी जाति, कुल, धन, संपदा का अभिमान करते हैं लेकिन गुरु साहिब जी ने इस पउड़ी में इस रहस्य का उद्घाटन किया कि वही वास्तव में धनवान है, ऊंची जाति वाला है, सच्ची शोभा वाला इज्ज़तदार व्यक्ति है जिसने अपने हृदय घर में सदा के लिए प्रभु को बसा लिया है।

उपरोक्त पउड़ी में इस रहस्य को भी समझाया गया है कि वास्तविक साधना तो जीव की है उस सर्वकला समर्थ परमेश्वर का जन हो जाना। उसे हृदय घर में आठों पहर पिरो कर रखना, उसी की शरण और आश्रय लेना तभी स्वयं की मुक्ति एवं संसार के अन्य जीवों को प्रेरित कर उस निरंकार से जोड़ने एवं उनको भी भवसागर से पार उतरवाने की समर्थता हासिल होती है। गुरबाणी में अनेकों ऐसे उदाहरण मौजूद हैं जैसा कि भक्त कबीर जी की पावन बाणी का उपदेश है :

राम जपउ जीअ ऐसे ऐसे ॥
ध्रू प्रहिलाद जपिओ हरि जैसे ॥ (पन्ना ३३७)

ऐसे महान जनों का जगत में आना सफल है, वे स्वयं तो मुक्त है ही उनकी संगत कोटि-कोटि जीवों का मार्गदर्शन करने की समर्थता वाली हो जाती है।



कविता

दशम गुरुदेव जी का फरमान

दशम गुरुदेव जी का है फरमानना!
गुरु ग्रंथ साहिब को गुरु मानना!
त्याग विकार मन के, तन के,
करें मन-तन की अर्पणा!
गुरबाणी हमारी रूह-रास,
गुरु-संगत चरण-धूलि परसना!
त्याग अहंकार की सोच सब,
सेवा में रत हो जावना!
गुरुदेव जी के चरणों पर सिर सौंपना!
गुरु-शबद मन-तन में रोपना!

-डॉ सुरिंदरपाल सिंघ, पत्तण वाली सड़क, पुराना शाला, गुरदासपुर-१४३५२१, फोन : ९४१७१-७५८४६

ख़बरनामा

शिरोमणि कमेटी के प्रबंध अधीन त्रै-शताब्दी गुरु गोबिंद सिंघ खालसा कॉलेज ने यूनिवर्सिटी ज़ोनल युवा उत्सव में तृतीय स्थान हासिल किया

श्री अमृतसर : ३ नवंबर : शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के प्रबंध तले त्रै-शताब्दी गुरु गोबिंद सिंघ खालसा कॉलेज, श्री अमृतसर ने यूनिवर्सिटी ज़ोनल युवा उत्सव के बी. डिवीजन में तृतीय स्थान प्राप्त कर ट्रॉफी हासिल की।

इस मौके पर कॉलेज की प्रिंसीपल श्रीमति जतिंदर कौर ने जत्थेदार अवतार सिंघ, अध्यक्ष, शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के सहयोग से कॉलेज के शिक्षार्थियों ने यह मुकाम हासिल किया है। उन्होंने बताया कि यूनिवर्सिटी 'ए' ज़ोन में १४ कॉलेजों ने हिस्सा लिया था, जिसमें हमारे कॉलेज के शिक्षार्थियों ने कवीशरी तथा एलोक्यूशन में प्रथम स्थान, काटूनिक में तृतीय स्थान तथा एकांकी में बीबी हरलीन कौर को सर्वोत्तम एवार्ड मिला। उन्होंने कहा कि खालसा कॉलेज में कंफैस्ट कामर्स विभाग द्वारा करवाए गए फैस्टीवल के हमारे कॉलेज के शिक्षार्थी बीबी कवलजीत कौर व बीबी मनप्रीत कौर ने रंगोली में प्रथम तथा स. गुरचरन सिंघ ने सिक्खी स्वरूप में द्वितीय स्थान हासिल किया। इस समय प्रिंसीपल ने शिक्षार्थियों को अच्छी पढ़ाई करने के साथ-साथ सभ्याचारक तथा खेलों में भी बढ़-चढ़कर हिस्सा लेने की ओर प्रेरित किया।

गुरबाणी के अपमान सम्बंधी घटनाओं के लिए केंद्र सरकार सख़्त कानून बनाए : जत्थेदार अवतार सिंघ

श्री अमृतसर : ४ नवंबर : जत्थेदार अवतार सिंघ, अध्यक्ष, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने मोगा के गांव मल्लके में पंथ विरोधियों एवं अमन शांति के दुश्मनों द्वारा गुरबाणी की पोथी के पन्ने (अंग) बिखेरने की घटना को अति निंदनीय करार दिया है। उन्होंने कहा गत दिनों से श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के स्वरूप, गुरबाणी की पोथियों एवं गुटका साहिब को फाड़ने की घटनाएं निरंतर जारी है, जिससे सिक्खों के हृदयों को भारी ठेस पहुंच रही है। उन्होंने पंजाब और केंद्र सरकार से मांग की है कि संविधान में सोध कर/करवाकर सख़्त कानून बनाया जाए।

प्रेस विज्ञप्त में अध्यक्ष, जत्थेदार अवतार सिंघ ने कहा कि श्री गुरु ग्रंथ साहिब समूची मानवता के सर्वसांझे गुरु हैं और गुरबाणी मानवता को सरबत्त के भले का पैगाम देती है, परंतु पंथ विरोधियों द्वारा बार-बार अपमान की घटनाओं को अंज़ाम देने से यह साफ ज़ाहिर है कि यह देश में अशांति फैलाना और भाईचारक सांझ को तोड़ना चाहते हैं। उन्होंने पंजाब तथा केंद्र सरकार को पुरज़ोर अपील करते हुए कहा कि जो शख़्स किसी धार्मिक ग्रंथ का अपमान करता है वह कायर और मानसिक रूप में बिमार व्यक्ति है, जिसका

कोई दीन-धर्म नहीं होता। इसलिए सरकार ऐसे घिनौने जुर्म के लिए ऐसा सख़्त कानून बनाए जिसके द्वारा पंथ विरोधियों को अंकुश लगाया जा सके। उन्होंने कहा कि ज़िला मोगा के गांव मल्लके के दोषियों को तुरंत गिरफ्तार किया जाए और सख़्त सज़ा दी जाए जिससे सिक्खों के तपते हृदयों को शांति मिल सके।

कनाडा के रक्षा मंत्री पर नसली टिप्पणी बेहद निंदनीय : जत्थेदार अवतार सिंघ

श्री अमृतसर : १३ नवंबर : जत्थेदार अवतार सिंघ, अध्यक्ष, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने कहा कि कनाडा के रक्षा मंत्री स. हरजीत सिंघ सज्जण पर वहां की आर्मी के उच्च अधिकारी द्वारा की नसली टिप्पणी को बेहद निंदनीय करार दिया है।

प्रेस विज्ञप्त में उन्होंने कहा कि लोकतांत्रिक तरीके से चुने गए स. हरजीत सिंघ सज्जण को वहीं की सरकार में रक्षा विभाग का अहम जिम्मेदारी वाला पद (ओहदा) सौंपा गया है। अगर रक्षा मंत्री पर ही वहां की फौज के किसी बड़े अधिकारी द्वारा नसली टिप्पणी की जा सकती है तो फिर इससे अपमानजनक बात और क्या हो सकती है? उन्होंने कहा कि कानून की रक्षा करने वाले ही अगर अपने रक्षा मंत्री पर नसली टिप्पणी कर सकते हैं तो फिर इससे सहज ही अंदाज़ा लगाया जा सकता है कि सामान्य लोगों का क्या हाल होगा। उन्होंने कहा कि स. हरजीत सिंघ सज्जण स्वयं भी पहले कनेडियन आर्मी में रहे हैं और उनकी योग्यता सदका ही वहां की सूझवान जनता ने चुना है; फिर सरकार में उनको रक्षा विभाग सौंपा गया है परंतु एक फौजी अधिकारी की इतनी हिम्मत कि वह अपने ही मंत्री के विरुद्ध नसली टिप्पणी करे। उस अधिकारी के लिए कनेडियन फौज में कोई जगह नहीं होनी चाहिए और उस अधिकारी को सख़्त सज़ा देनी चाहिए ताकि दोबारा कोई ऐसी हिम्मत न करे।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब का अपमान करने पर होगा आजीवन कार्यावास

चंडीगढ़ : १९ नवंबर : पंजाब मंत्री मंडल के मुख्यमंत्री स. प्रकाश बादल की अध्यक्षता तले हुई मीटिंग में अहम फैसले लिए गए, जिसमें मंत्री मंडल द्वारा श्री गुरु ग्रंथ साहिब का अपमान करने की राज्य में गत दिनों घटित हुई घटनाओं पर अफसोस और रोष प्रकट करते हुए अहम फैसला लिया गया कि ऐसे मामलों में मौजूदा सज़ा को ३ वर्ष से बढ़ाकर आजीवन कार्यावास (उम्र कैद) में बदल दिया जाए तथा इस मंतव्य के लिए भारतीय दंडावली में आवश्यक तरमीम करने के लिए कानून विभाग को कहा गया है।



प्रिंटर व पब्लिशर स. दिलजीत सिंघ ने गोल्डन आफसेट प्रेस, गुरुद्वारा रामसर साहिब, श्री अमृतसर से छपवा कर मालिक शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के लिए कार्यालय, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर से प्रकाशित किया। प्रकाशित करने की तिथि : ०१-१२-२०१५